साईं का आनंद पथ

SAI KA ANAND PATH

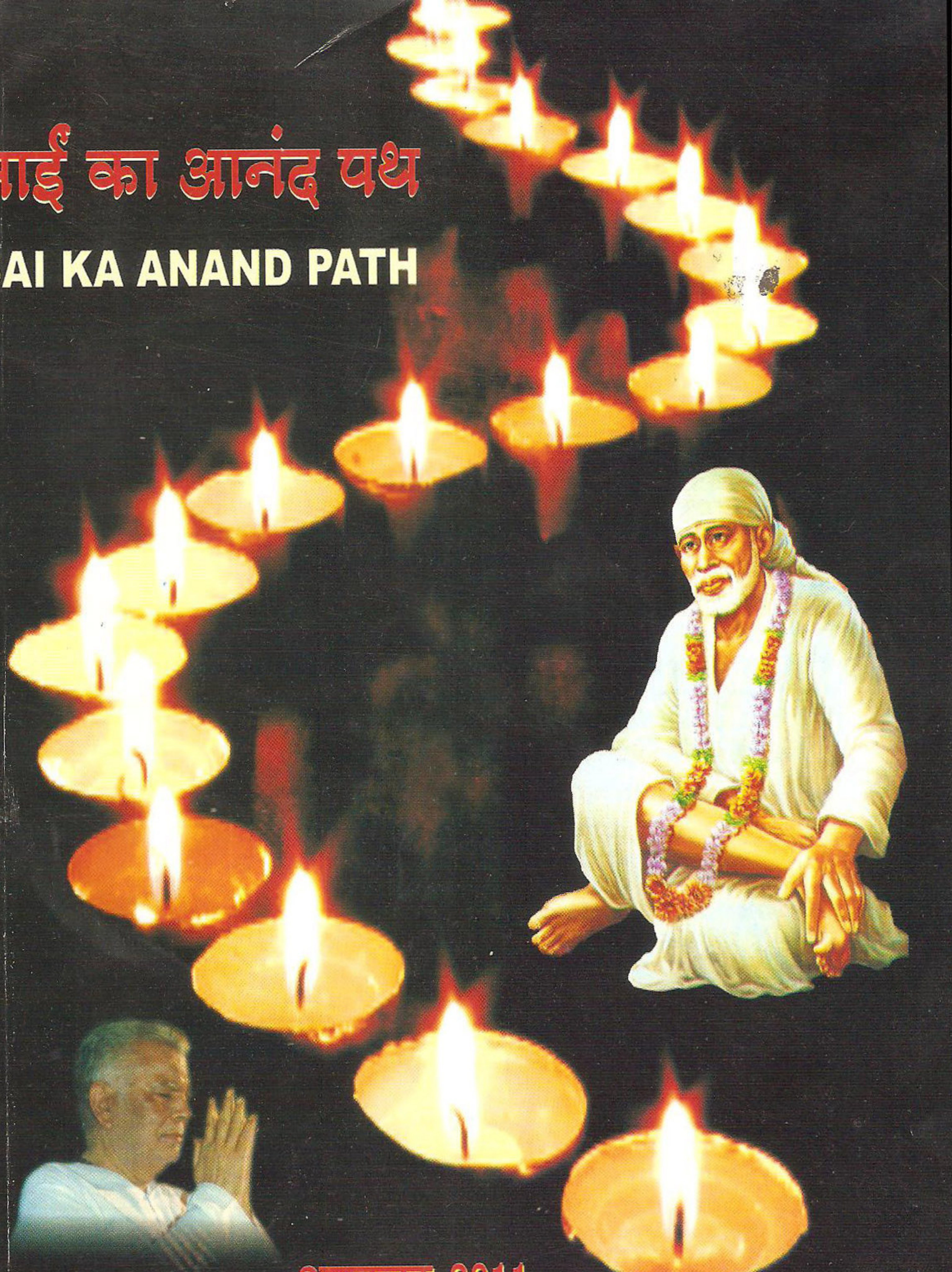

अक्टूबर 2011

SAI KA ANAND PATH
QUARTERLY MAGAZINE

October – 2011

Correspondence Address
SAI KA ANAND PATH
Sri Anand Sai Marg
Besides Ananda Apts.
Clarke Town,
NAGPUR-440 004.(M.S.)
Ph.No. 6574825
Cell : 9823134765
e-mail :
saipublications@rediffmail.com

Published & Edited by :
Ranveer Taneja

SUBSCRIPTION :
Life (25 Years) : Rs. 1400/-
5 Years : Rs. 400/-
2 Years : Rs. 200/-

Printed at :
Mudrashilpa Offset Printers,
Nagpur

Type setting :
Lipi Systems
Dhantoli, Nagpur.
M.: 9921614855

Please quote your Registration No. while corresponding.

साईं का आनंद पथ

CONTENTS / अंतरंग

हिन्दी विभाग

अमृत सन्देश (Nectar Message)	...	1
रक्षामृत (दिव्य रक्षा कवच)	...	2
समर्पण	...	3-7
राधे राधे बोल	...	8
आनंद का पथ	...	9-15
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	...	16-18
अहंकार अहंकार	...	19-24
पतित पावन साईं	...	24
शक्ति सत्स्वरूप	...	25-27
सत् सेवा मन लागे	...	28-29
भगत् भयहारी माँ	...	30
सेवा धर्म	...	31-34
अमृत वचन	...	35

English Section

Glimpses of Truth	...	36
Our Heart – Our Soul	...	37-40
Three pronged attack on Dukhas		40
Divine Path	...	41-42
Nectar Message	...	43
Your Own Page	...	44-47

May Sai's Blessings Enlighten you.

The editor does not accept responsibility for views expressed in articles published.

अमृत-सन्देश

NECTAR MESSAGE

(The Message of Sri Anand Sai penned in His own hand)

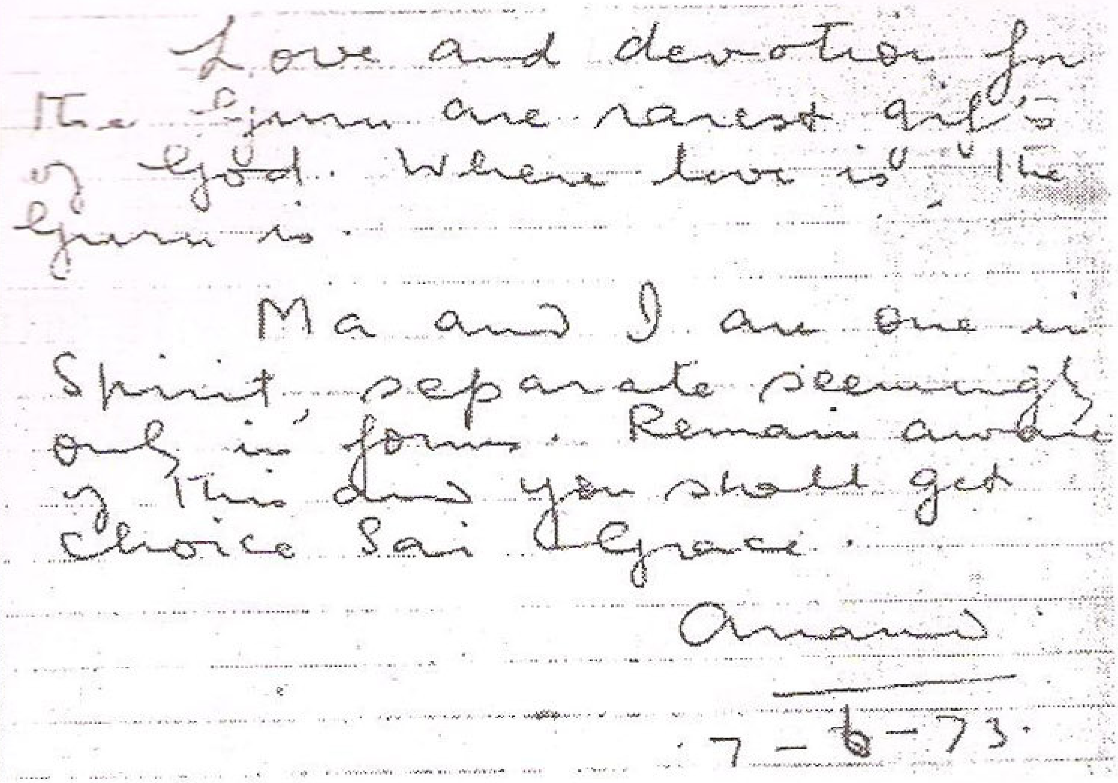

Love and devotion for
the Guru are rarest gifts
of God. Where love is, the
Guru is.

Ma and I are one in
Spirit, separate seemingly
only in form. Remain aware
of this and you shall get
choice Sai Grace.

Anand

7-6-73.

Love and devotion for the Guru are rarest gifts of God. Where love is the Guru is.

Ma and I are one in Spirit, separate seemingly only in forms. Remain aware of this and you shall get choice Sai Grace.

anand
7-6-73

रक्षामृत (दिव्य रक्षा कवच)

श्री साईं रक्षा

अंधे को जो चक्षु दें
लूले को बल दान ।
सो हमारी रक्षा करें
श्री साईं मात महान ।।

जा के भय से जादू टोने भूत प्रेत हों नाश ।
सो हमारी रक्षा करें साईं सत्य प्रकाश ।।
जन को साची भक्ति दें घट में आतम् ज्ञान ।
सो हमरी रक्षा करें साईं मात महान ।।
दीन दुःखी के आश्रय जन पर सदा दयाल ।
सो हमरी रक्षा करें साईं नाथ कृपाल ।।
शरणागत के अपराधों को क्षमा करें भगवान ।
सो हमरी रक्षा करें साईं मात सुजान ।।
जा की महिमा श्रुति गावे गावें वेद पुराण ।
सो हमरी रक्षा करें साईं शिव भगवान ।।
हे शिर्डी के नारायण रक्षा कीजो मोरी ।
चार वेद छः शास्त्र महिमा गावैं तोरी ।।

"ॐ श्री साईं"

समर्पण

जो आत्माएँ इस कलयुग के भयानक अंधेरे में भी प्रकाश की खोज में हैं, जो इन हालातों में भी सत् को खोज रही हैं, सत्य को जानने और समझने के लिए व्याकुल हैं, जो इस माया भरी गर्मी में भी शीतलता की तलाश कर रही हैं उन ईश्वर की प्रिय आत्माओं के लिए **साईं का आनंद पथ** प्रकाशित किया जा रहा है। प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी की दया और अनुकंपा से यह पावन पत्रिका जिज्ञासू आत्माओं को, बाबा के सच्चे प्रेमियों को बाबा का सत्मार्ग बता रही है। अनेकों प्यासी आत्माओं को नवजीवन मिल रहा है। अंधकार में प्रकाश रूपी यह पत्रिका अनन्य आत्माओं को सच्ची राह दिखा रही है। यह पत्रिका मात्र एक पत्रिका नहीं है अपितु पूर्ण ब्रह्म द्वारा उस तक पहुँचने का मार्ग उन्हीं के शब्दों में लेकर आप तक पहुँचाने का एक जरिया है। पूर्ण गुरु श्री आनंद साईं जी के द्वारा क्षीरसागर की अमृत धारा बाबा साईंनाथ ने हम जिज्ञासुओं के उद्धार के लिए बहाई। वही अमृत धारा इस पावन पत्रिका द्वारा आप सभी को अमृत रस पान करा रही है। गुरुवाणी रूपी यह सुंदर खुशबूदार फूलों की महक आपके जीवन में अमृत रस घोले और आप सभी का जीवन धन्य हो जाए बस यही प्राणप्यारे सत्गुरु, साईं अमृत पुत्र श्री आनंद साईं जी के श्री चरणों में विनम्र प्रार्थना है।

आज जगत् में आग लगी हुई है। हर एक जीव माया के पीछे पागलों की तरह भाग रहा है। हर तरफ लूट-खसूट हो रही है। धन संचय ही जैसे सभी के जीवन का एक मात्र ध्येय बन गया है। धन एकत्रित करने के लिए भले ही उसे उल्टे मार्ग पर चलना पड़े, भले ही कईयों के प्राण लेने पड़ें, भले ही कईयों का खून चूसना पड़े, भले पापों का अम्बार खड़ा करना पड़े किसी को कोई परवाह ही नहीं। मानव यह भूल चुका है कि उसने एक दिन मरना है। मरने के बाद उसके साथ उसके द्वारा संचित किया हुआ यह धन,

महल-माड़ियाँ, यह ऐश-ओ-इशरत का सामान साथ नहीं जाना। उसके साथ यदि कुछ जाना ही है तो यह सब जमा करने के लिए किए गए अत्याचारों का अम्बार। पापों की न दिखने वाली भारी भरकम गठरी सिर पर लाद कर जीव आत्मा उस परवरदिगार के पास जाएगी तो क्या पाएगी। प्राणप्यारे पापा कहा करते थे यदि आपको ऐसे कर्म करने वालों की आगे क्या गति होती है बता दूँ तो तुम्हारे जीते जी परखचे उड़ जाएँगे। सभी कहते हैं आगे किसने देखा है। आगे का यदि कुछ थोड़ा सा भी साक्षात्कार हो जाए तो उसका एक भाग भी आप सह नहीं पाओगे। वे कहते थे कि जरुरत के लिए मिल गया तो ज़खीरा क्यों? क्यों दूसरों के मुँह के निवाले खींच लेते हो। क्यों दूसरों के कपड़े चुरा लेते हो। क्यों नहीं दूसरों को भी जीने देते। क्यों उनका हक छीन कर तिजोरियाँ भरते हो। प्राणप्यारे ने बहुत ही कटू शब्दों में सच्चाई को हमारे सामने रखा है। कहते हैं: **भूलना नहीं बेईमानी से कमाया हुआ एक-एक पैसा अंतड़ियाँ फाड़कर बाहर निकलता है।** उन्हीं के यह शब्द भी हैं – **अधर्म की कमाई घर में नहीं आने दो नहीं तो तुम्हारा सर्वनाश कर देगी।** तो भाई जागो, सच्चाई को समझो और यह नम्बर दो की कमाई, अधर्म की कमाई, पाप कमाई, बेईमानी की कमाई को त्यागो। यह कमाई घर में लाना गोया अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारने जैसा है। सावधान हो जाओ, बाबा साईंनाथ के सच्चे रास्ते को अपनाओ, उसमें रहो। बाबा की अपरम्पार दया के पात्र बनो। बाबा साईंनाथ के प्यारो जागो, बाबा से सच्चा प्रेम करते हो तो उसके मार्ग को अपनाओ और साईं माँ की दया, कृपा के पात्र बनो। साईं माँ बाहें फैलाए अपने सच्चे बच्चों को पुकार रही हैं।

एक कहानी याद आती है। एक राजा का मुलाज़िम था जिसे राजा ने कुछ गाँवों का लगान जमा करने का कार्य सौंपा हुआ था। यह मुलाज़िम राजा के सामने तो बड़ा दीन बनकर खुशामदी करते रहता लेकिन वास्तव में बड़ा ही गैरज़िमेदाराना व लालची, बेईमान किस्म की शख्सियत का आदमी था। गरीब किसानों पर बड़े ही जुल्म करता था और अपना घर भरने में लगा था। जब

उसके ज़ुल्म ज्यादा ही बढ़ गए तो गाँव के कुछ लोग राजा के दरबार में पहुँचे। उन्होंने राजा को उस मुलाज़िम की सारी बातें बताईं। राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने उसे बुला कर फटकार लगाई और उसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया। मुलाज़िम रोया, गिड़-गिड़ाया, माफी माँगी और नौकरी से न निकालने की फरियाद की। राज़ा को दया आ गई। उन्होंने उसे फिर रख लिया और यह सोचकर उसे समुद्र किनारे बैठकर लहरें गिनने का काम सौंपा कि इसमें यह क्या बेईमानी कर पाएगा। साथ ही ताकीद दी की इस काम को ढंग से करे और कोई बेईमानी न करे। अब यह मुलाज़िम समुद्र के किनारे बैठकर लहरें गिनने लगा। समुद्र में मच्छुआरे जाते थे और बड़ी-बड़ी मच्छलियाँ पकड़कर लाते और बेचकर अपना उदर पालन करते। कुछ समय तो मुलाज़िम कुछ नहीं बोला परन्तु आदतवश उसका ख़ुराफाती दिमाग काम करने लगा। मच्छुआरे जब मच्छली पकड़कर आते तो यह उन्हें रोक देता, किनारे नहीं आने देता। कहता मेरे काम में खलल पड़ता है। तुम्हारे कारण मैं लहरें ठीक से गिन नहीं सकता। महाराज को रोज बताना होता है यदि ठीक से नहीं बताया तो वे नाराज़ हो जाएँगे। ऐसे डरा धमकाकर वो हर मच्छुआरे से एक बड़ी मच्छली लेने लग गया और फिर अपने पुराने ढंग से घर भरने लगा। उसने इस काम में भी अपना उल्टा रास्ता निकाल ही लिया। ऐसे होते हैं उल्टी बुद्धि वाले लोग। ठीक ऐसा ही आज हो रहा है। लूट-खसूट मची है।

भगवान के द्वारा बनाई गई इस संसार रूपी मशीन का हर भाग ठीक से काम नहीं कर रहा है। दिए गए कार्य को ठीक से नहीं निभा रहा है। फलस्वरूप सब उल्टा-पुल्टा हो रहा है। अरे भाई, ईश्वर ने जो भी कार्य आपको सौंपा है उसे दयानतदारी से करो। चाहे आप व्यापारी हो या ठेकेदार हो, चाहे आप नेता हो या अभिनेता हो अपना काम ईमानदारी व सजनता से करो। आप भी सुखी रहोगे और आप के साथ-साथ अन्य जीव भी सुखी रहेंगे। सारा संसार आनंदमय रहेगा। सुखदायी वातावरण बनाने के लिए दूसरों के दु:खों को समझना बहुत जरूरी है। अरे, अपने लिए तो जानवर जीते हैं तुम तो मनुष्य हो। ईश्वर

ने तुम्हें बुद्धि दी है उसको अच्छे काम में लगाओ, दूसरों के कल्याण के लिए बुद्धि का प्रयोग करो। अपने लिए नहीं सर्वस्व के लिए जीना सीखो बाबा की दया तुम्हें उठा लेगी, अपने सीने से लगा लेगी।

प्राणप्यारे पापा श्री आनंद साईं जी कहते थे कि ईश्वर ने सर्वत्र के लिए, हर जीव के लिए उसके जीवन यापन के लिए पूर्ण व्यवस्था की है। उसकी व्यवस्था इतनी परिपक्व है कि जगत में जन्मा हर जीव अपना जीवन काल आराम से गुजार सकता है। लेकिन भला हो जमाखोरों का, ज़खीरा करने वालों का जो अपनी तिजोरियों में लाखों जीवों की भूख, प्यास, वस्त्र, दवाएँ भर कर रख लेते हैं। ऐसे जीव ईश्वर के कार्य में बाधक होते हैं, ईश्वर के कार्य में रोड़े अटकाते हैं। ऐसे जीव कितना भी कर लें ईश्वर की दया को नहीं पा सकते। ईश्वर की नाराज़गी उन्हें अंत में कहीं का नहीं छोड़ती। एक जीव लाखों की भूख का जिम्मेदार है तो बताओ व जगत जननी की संतान हो सकता है क्या? जननी के लिए तो सभी जीव एक बराबर हैं। माँ की ममता सभी पर बराबर होती है। यदि उस माँ का एक बच्चा लाखों के भूखे सोने का कारण हो तो माँ को कैसे चैन आएगा। माँ कैसे शांति से बैठ सकती है। माँ के बच्चे भूखे रहें, नंगे रहें, दवाई के लिए उनके पास पैसा ना हो और वो भी कुछ, चंद द्वैतबुद्धी, दुर्बुद्धी, स्वहिती जीवों के कारण तो माँ कैसे सहन कर सकती है। माँ का हृदय अपने दु:खी बच्चों के लिए पसीजता है और क्रोध उन जमाखोरों का सर्वनाश करता है। माँ के प्रकोप से ऐसे जीव बच नहीं सकते। क्यों फिर हम आफत को दावत देते हैं? क्यों हम जमाखोरी में लगे हैं? अरे भाई कितना भी ज़खीरा कर लो सब कुछ यहीं रह जाना है। एक तिनका भी साथ नहीं जाना। तो जाग जाओ। सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। छोड़ दो उल्टे धन्दे। ईश्वर की देन में जीओ। सादगी में जीवन व्यतीत करो। बेईमानी को ठोकर मारो। बाबा साईंनाथ के सच्चे और सुच्चे बच्चे बन जाओ। बाबा दीनदयाल तुम्हें अपने आँचल में सदा-सदा के लिए समा लेंगे।

श्री गुरु पूजा का पावन पर्व हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री आनंद साईं

दरबार में बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। सत्गुरु के प्रेमियों ने श्री गुरु चरणों में श्रद्धा सुमन चढ़ाकर सत्गुरु से अपना नाता प्रबल किया। तीन दिनों तक चले इस कार्यक्रम में मानो गुरु दया की गंगा बह रही थी। निराकार रूप से प्राणप्यारे सत्गुरु श्री आनंद साईं जी हम सभी के बीच विचर रहे थे और वातावरण को प्रफुलित कर रहे थे। आनंद के दरबार में आनंद ही आनंद समाया हुआ था। पारब्रह्म परमेश्वर बाबा साईंनाथ, माँ भगवती और उन्हीं के अमृत पुत्र श्री आनंद साईं जी की रहमत से इस पावन पर्व पर एक नई पुस्तिका "श्री आनंद साईं वचनामृत" (Gospel of Sri Anand Sai) का विमोचन श्री यश गुरुजी के हस्ते किया गया। यह एक नायाब पुस्तिका है।

बाबा साईंनाथ के वर्ष 2012 के कैलेण्डर, डायरी इत्यादी अब साईं पब्लिकेशन्स में उपलब्ध हैं। आप चाहें तो प्राप्त कर सकते हैं। इस माध्यम से बाबा का सत् संदेश घर-घर तक पहुँचाने में आप सभी का सहयोग नितांत आवश्यक है। आप इन्हें अपने प्रिय जनों को भेंट स्वरूप देकर बाबा के अमृत वचन उन तक पहुँचाएँ।

हम कहते हैं हम तेरे प्यारे हैं। हम कहते हैं हम तेरे दुलारे हैं।।
हम कहते हैं हम तेरे हैं। हम कहते हैं हम तुम्हें चाहते हैं।
हम कहते हैं तुम्हें पाना है। हम कहते कहते ही रहते हैं।।
हमारी करनी कुछ और ही कहती है। कहने से अलग ही कहती है।।
आँख खोल ज़रा देख ले प्यारे। जो कहता है क्या वो करता है।

कथनी और करनी में भेद क्यों? इस बात पर जरा गौर फरमाएँ। जरा विचार करिए और अपने अंदर झाँक कर देखिए। इस विचार के साथ आप को अलविदा कहते हैं। सत्गुरु पतित उद्धार की इच्छा से अगली बार इसी माध्यम से फिर मुलाकात होगी। शब्बा खैर।

"जै जै दाता आनंद साईं"

श्री गुरु चरण-कमलों में सादर समर्पित।

राधे राधे बोल

बोल बोल बोल रे मनुवा
राधे नाम अपारा।।
श्री राधे भज श्री राधे भज
भज ले बारम्बारा।।

श्री राधे श्री राधे कहते
घट में अमृत बहता है।।
प्रसन्नता से जीव ये
फिर कर्मों का फल सहता है।।

राधे राधे कहते कहते
अपने में खो जाता है।।
राधे राधे बोलते
ये जगत् लोप हो जाता है।।

राधे माँ का सत् स्वरूप
फिर कण कण माहीं समाता है।।

"ॐ श्री साई"

आनंद का पथ

(श्री आनंद साईं जी के अमृत वचन)

"आनंद का पथ" इस शीर्षक के अंतर्गत या फिर अन्य शीर्षकों के अंतर्गत प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी द्वारा दिए गए प्रवचनों को लिपिबद्ध कर सर्व जगत् के कल्याण के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। लगभग हर बार ही ऐसा होता था कि प्राणप्यारे गुरुदेव प्रवचन शुरु ही करते थे और फिर सोयम् ईश्वर के रूप से सीधी वाणी आना शुरु हो जाती थी। ऐसा एक बार नहीं अनेकों बार हमने आँखों से देखा और कानों से सुना है इसीलिए इस पत्रिका में दिए जा रहे लिपिबद्ध प्रवचन में कई बार माँ भगवती या बाबा साईंनाथ सोयम् हमें अपना रास्ता बताते हैं। पाठकों की जानकारी व प्रकाशित प्रवचन ठीक से समझने हेतु ये जानकारी दी जा रही है।

– संपादक

प्रेमामय सत्गुरु

जै जगदम्बे जै-जै अम्बे जै जै जै महाकाली तू ।
शैलपुत्री वाराही तू दुर्गा सिंह वाहनी तू ।।

आज प्रभु राम का जन्म है। राम भक्ति जैसी जगत् में आनंद देने वाली दूसरी कोई चीज़ नहीं है। प्रभु राम लक्ष्मण जी से कहते हैं – हे लक्ष्मण जिस चीज़ से मैं आसानी से जीव के काबू में आ जाता हूँ वो है मेरी सुखदायिनी सच्ची भक्ति। परन्तु हे लक्ष्मण याद रखो, वो भक्ति जीव को मिलती तभी है, जब किसी सच्चे संत या सच्चे गुरु की कृपा जीव को मिलती है, तब तक नहीं। आज इस राम नवमी के दिन गुरु महाराज की याद आ रही है। उनकी अपार दया, कृपा और बख्शीश। इस चोले (आनंद साईं) ने उनसे राम नाम का परम अमृत पीया है। ऐसा अमृत पिलाया उन्होंने अपनी अपार दया से कि बरसों शरीर की सुध-बुध

ही नहीं रही। ये उनकी अपार दया और कृपा थी। स्वयं राम भक्ति में रंगे हुये 150 बरस तक राम के रंग में रंगे रहे। जिस पर उनकी मेहर की नजर हो जाती थी, उसके अन्दर राम नाम की भक्ति जागृत हो जाती थी। ये इस शरीर का अनुभव है। इस शरीर को राम चरणों से जो मिला है उनकी अपार दया से मिला है। जो कुछ भी प्रेम मिला उनकी अथाह कृपा थी। बाबा साईंनाथ की दया थी, बाबा साईंनाथ का प्रगट रूप थे। आज आते ही, उनकी तस्वीर के सामने नमस्कार करते हुये ही मन भर आया, उन्होंने क्या नहीं दिया। **मनुष्य अपने गुरु का ऋण एक जन्म तो क्या कोटि जन्मों तक भी नहीं चुका सकता।** जो अमृत उन्होंने पिलाया बरसों तक उसमें मदहोश पड़े रहे। ऐसी गुरु की देन होती है। कई बार ऐसे मौके मिले हैं जब राम नवमी के पावन उत्सव पर वो स्वयम् यहाँ पर विराजमान रहते थे। एक अजीब आनंद की स्थिति बनती थी। ऐसा लगता था स्वयम् सरकार खुद विराजमान हैं, हमारे सबके दरम्यान बैठे हैं। एक अजीब खुशी रहती थी, एक अजीब आनंद मिलता था उनकी हजुरी में बैठ कर, जो शब्दों का विषय नहीं है। राम नाम से उन्हें अथाह प्रेम था, पूरन जोगी पुरुष होते हुये भी इतनी बड़ी आयु योग अभ्यास से पाकर भी योग की पूरी क्रिया करते हुये भी वो हृदय से सच्चे राम भक्त थे। उनके मन में, उनके रुएँ-रुएँ में, राम भक्ति समाई हुई थी। जब उन्होंने स्वरूप छोड़ा, दो दिन पहले उन्होंने लिखवाया – ऐसे-ऐसे हमारे राम के शरीर को किसी गाड़ी पर चढ़ा कर शहर-शहर घुमायेंगे। कलयुग में पहली बार शायद जैसे-जैसे नीचे ये शरीर घुमेगा ऊपर-ऊपर प्रभु राम लक्ष्मण सीता साथ में घुमेंगे। इतना वो राम नाम में खो चुके थे। राम में खो चुके थे। इतना वो राम में मिल चुके थे कि राम जी को उनकी अर्थी के साथ घुमना पड़ा। आखरी समय बताया मेरी अर्थी जिधर-जिधर जायेगी सरकार खुद घुमेंगे रथ में बैठ कर अपने दरबार को लेकर, एक अजीब समय था बताये बनता नहीं है। एक अजीब स्थिति थी, जो कुछ उन्होंने बताया ठीक बताया। आज राम नवमी के दिन उनकी पावन पवित्र याद के साथ उनको श्रद्धांजली अर्पित करके, भेट करके फिर हम शुरु करते हैं।

मेरे सत्गुरु रामटेक में प्रभू में ध्यान लगाते थे ...

एक बात और आपको बताते हैं, समझने की बात है। गुरु आज्ञा हर बात में प्रथम होती है। ध्यान देकर सुनो, आखरी समय वो अपना संदेश लिखा कर गये कि हमारे जाने के बाद हमारे सब लड़के उनको हमारे रूप में देखें। संदेश की बात तो अलग है, जाते-जाते अपनी आत्मा इस आत्मा के साथ मिला कर गये परन्तु इस मन में एक अजीब बात थी, शुरु से ही बड़ा बनने से कोई भी ऐसी स्थिति जिसमें अपना कुछ नाम हो, बड़ा बनना, उससे मन घबराता था। उनका ये सब करने के बावजूद भी इस मन में आगे आने की इच्छा कभी नहीं हुई, ना ही आगे हुये, और ऐसा लग रहा था जो महाराज ने सिखाया, दीन बन कर रहो, बड़ा नहीं बनना, कभी बड़ा बनने की कोशिश मत करो। मन में ये ही विचार था बड़ा नहीं बनना, उसी में रहते थे। उसमें रहते हुये ये भूल रहे थे, गुरु आज्ञा का उल्लंघन हो रहा है इसीलिये तुम्हें समझा रहे हैं, अपने मन को छोड़ देना पड़ता है। गुरु आज्ञा में अपने मन को छोड़ देना पड़ता है। डेढ़-दो बरस ऐसे बीत गये, वो आत्मा में आत्मा मिला कर गये थे। संदेश देकर गये थे। गुमनाम रहने की इच्छा रहती थी। उन दो बरसों में, डेढ़-दो बरसों में बहुत ही तकलीफ हुई, बहुत ही तकलीफ हुई। बहुत तकलीफ में ही वो समय गुजरा, उसी तकलीफ में हम बम्बई गये, वही कुछ संदेश दिया, वहाँ कुछ और बताया गया, वहाँ से जयपुर गये वहाँ कुछ और बताया गया, वहाँ से दिल्ली गये वहाँ आदेश दिया, तुम हमारी आज्ञा का उल्लंघन क्यों कर रहे हो, जो तुम्हें संदेश दिया गया था, जो सेवा का कार्य हमने दिया है उससे पीछे क्यों हट रहे हो, मन बाबा के चरणों में विलीन रहता था। उनकी आज्ञा पाकर एक अजीब मन की स्थिति हो गई। पर मन अन्दर से बोले बाबा का क्या हुक्म है? बाबा का क्या हुक्म है? ऐसे जैसे ये विचार उठा महाराज भी प्रगट हो गये। महाराज ने हुक्म दिया जैसे स्वामीजी कहते हैं उनकी आज्ञा का पालन करो, पीछे नहीं हटो। मैं महाराज जी से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगा, मैं तो बच्चा हूँ, गुरु बनना तो बहुत बड़ी बात है। मुझे क्या समझ है, तो महाराज ने हुक्म दिया सब खेल मैं करूँगा डरो नहीं।

मैंने प्रार्थना किया, आपने एक बार हुक्म दिया था, बड़ा नहीं बनना, मैं उसी में रहता हूँ। बड़ा बनने से मैं घबराता हूँ। तो महाराज ने स्वयम् हुक्म दिया, मेरी इच्छा से आगे आओ, स्वामीजी की ही नहीं हमारी भी इच्छा है। मैंने प्रार्थना किया, मैं बोला ये मेरे से कैसे होगा, मैं किसी को बोल भी नहीं सकता कि मेरे पास आओ, मैं तुम लोगों की सेवा करूँगा, महाराज ने बोला मैं खुद लाऊँगा, जिन-जिनका उद्धार करना होगा उनको लाऊँगा। तुम्हें किसी को बुलाना नहीं पड़ेगा, तेरे अन्दर मेरा बास होगा, मैं सारे काम करूँगा, तेरे अन्दर से मेरा खेल होगा घबराओ मत, जैसे स्वामीजी कहते हैं इनकी आज्ञा का पालन करो, ये ही मेरी आज्ञा है। अब समय आ गया है, काम शुरु होना चाहिये, श्री स्वामी जी की आज्ञा पाकर ये शरीर वहीं पर बेसुद्ध हो गया, कितनी देर उसे कुछ होश नहीं रही, कुछ पता ही नहीं लगा कहाँ पड़े हैं। जो महाराज ने हुक्म दिया आज ही चलना, वापिस चलना है और अपना काम शुरु करना है। यहाँ पर वापिस (नागपुर) आये और जैसे-जैसे महाराज ने हुक्म दिया था उन्होंने अपना खेल आप शुरु कर दिया। सच बात है इस शरीर को कुछ भी नहीं करना पड़ा, जो कुछ खेल हुआ, पहले दिन से ही जो कुछ हुआ उन्हीं का हुआ और वो ही खेल चलते आ रहा है। मैंने किसी को यहाँ पर बुलाया नहीं, इस दरबार में कोई नहीं कह सकता मुझे बुलाया गया, श्री महाराज ने जिस-जिस को लाना था अपने आप लाये। जिस-जिस का उद्धार करना था, जिस-जिस का पिछले जन्मों का संबंध था, जिन-जिन को पिछले जन्मों में चलाया था, उस-उस को एक-एक करके यहाँ पर लाते गये। दिन ब दिन आनंद की स्थिति बढ़ती चली गई, फिर आज से चार साल पहले जब हरिद्वार में श्री महाराज प्रगट हुये तो वहाँ हुक्म दिये, माँ की उपासना करनी चाहिये, उसमें भी कुछ थोड़ी सी ढील हुयी, हम उन्हीं के रंग में रंगे रहते थे फिर स्वयम् ही माँ की उपासना कराया और क्या अमृत पिलाया, आप सब जानते हो, कमाल कर दिया, जिन्दगी में कभी किसी एक ने भी कल्पना नहीं किया था कि इस चोले में हमें इतना अमृत पीने को मिलेगा। ये सब बाबा साईंनाथ की देन है, मैं स्वामी जी को भी सदा उन्हीं के रूप में देखता रहा। स्वामी जी में भी

उन्हीं की शक्ति काम करती थी। श्री स्वामीजी.जी.को महाराज के चरणों से बहुत प्रेम था। अगाध प्रेम था।

तो आज इस राम नवमी के दिन गुरु महाराज की भी याद आ रही है कि कैसा ये खेल गुरु महाराज ने कराया, वो भी सामने आ रहा है फिर कैसा प्रत्यक्ष कराया, आगे भी एक बार बोला पंजाब में दसों गुरु, जब एक गुरु दूसरे गुरु को गद्दी देते थे, तो क्या करते थे, हर बार ऐसे ही हुआ, एक नारियल, चद्दर, पाँच पैसे मँगाते थे। अपने हाथ से, पहले गुरु दूसरे गुरु के चरणों में पाँच पैसे और नारियल रख कर नमस्कार करते थे। उनके साथ बगलगीर करते थे। गुरु की ज्योत उनके अन्दर आ जाती थी और वहाँ पर शरीर छोड़ देते थे। ऐसे दसों बार हुआ, एक-दो बार को छोड़ कर, जब वो एक दूसरे के सामने नहीं थे, नहीं तो हर बार ऐसे ही हुआ। हर बार उन्होंने चद्दर उड़ानी और बगलगीर करना। यहाँ पर तो उससे भी बहुत ज्यादा हुआ, यहाँ पर तो जब वो जाने लगे रात को तीन बजे के समय में जब यहाँ पर सोया था, सोये-सोये मेरे को लगा कि आत्मा से आत्मा मिला दिया, दोनों आत्मायें मिल रही हैं, मैं एकदम जाग गया, एकदम जागते समय ऐसा लगा सारे संसार का प्रेम मेरे को दे रहे हैं और आत्मा से आत्मा मिलाते जा रहे हैं। ऐसा प्रत्यक्ष रूप से दिखाया। ऐसे उन्होंने अपनी आत्मा इस आत्मा के साथ मिला दिया। श्री महाराज के हुक्म से, बाबा के हुक्म से और दूसरे दिन वहाँ पर शरीर छोड़ दिया। अभी यहाँ पर जो भी कार्य हो रहा है उसमें उनका भी आशिर्वाद है। बाबा की अपार दया से आखरी दिनों में जब उनका शरीर छोड़ने का समय आया तो आखरी छः महिने साल उनको इस शरीर से बच्चे का सा भाव हो गया, ज्यादा से ज्यादा अपने पास रखते थे। बाबा की वो अपार दया भूली नहीं जा सकती है। बहुत दफे दस बजे तक रोक लेते थे, अन्दर बुलाते थे, दरवाजे बन्द करवा देते थे। अकेले में बुलाते थे, अपने हाथ से रोटी और शहद का गोला सा बना कर खिलाते थे। आ मुन्नू – आ मुन्नू इधर आ, इधर बैठ जा और वो गोला बना कर खिलाते थे। ऐसा अगाध प्रेम था उनका, जीवन में ऐसा प्रेम कहीं नहीं पाया, इस शरीर ने। जो उनसे पाया। शरीर के सगे माँ

बाप से, किसी से भी ऐसा प्रेम नहीं पाया, जो गुरु महाराज से पाया, स्वामी जी से पाया। सब प्यारे बाबा की दया थी। उनकी कृपा थी, उनकी दया थी।

साईं दया के बिना इस शरीर में कुछ नहीं है, जो कुछ है साईं दया है। उसके सिवाय कुछ भी नहीं है फिर साईं दया ने क्या सुन्दर अमृत पिलाया है, अभी बात कर रहे हैं तो भगवती का कितना सुन्दर स्वरूप बाबा सामने दिखा रहे हैं कि असली अमृत तो मैंने यहाँ पर पिलाया। माई की इतनी सुन्दर तस्वीर सामने आ रही है। सुन्दर रूप सामने आ रहा है, बाबा कहते हैं ये मेरी असली देन है जीव को, ये अमृत है, सच है। जो कुछ है सब साईं दया है, साईं दया के बिना कुछ भी नहीं है, कुछ भी हम करें, कुछ भी करें, है सब साईं दया, माँ की दया भी मिल रही है तो दिलवाने वाला कौन है साईं की अपार दया, दिलवा कौन रहा है? माँ की आराधना, हम कर रहे हैं? तो कौन करा रहा है? सारा का सारा खेल उन्हीं का है। सब का सब, पूरा का पूरा माँ का खेल है। एक जर्रे मात्र को भी इस शरीर में उसके सिवाय कुछ भी नहीं है, सब उन्हीं का खेल है। ये बच्चा जो बोल रहा है सत्य वाणी है। मैं ही इस शरीर के अन्दर से बरसों से आपकी सेवा कर रहा हूँ, बचपन से इस शरीर का जीवन मेरे हाथ में था, पल-पल मैंने ही इसको चलाया, कदम-कदम पर मैंने ही इसको चलाया, आज जो भी सेवा इस रूप से हो रही है उसके लिये बचपन से मैंने तैयारी करायी, इस बच्चे को सब धर्मों में, सब जातियों में हर तरह की philosophy हर तरह के रास्ते बचपन से ही मैंने समझाये। अलग-अलग रूपों से सब तरह से मैंने इसको चला कर पावन किया। मैं ही इसको श्री स्वामी जी के पास लेकर गया। वहाँ से मैंने इसको माई की भक्ति में डुबा दिया। शिव महिमा और भगवती महिमा मैंने इस रूप के द्वारा लिखवाई फिर इसको अपने दातात्रे रूप की उपासना में लगाया, दातात्रे महिमा लिखाई, फिर श्री स्वामी जी को बोल कर वापिस मैंने इसको अपने पास लिया। अपने रंग में रंग लिया, फिर इससे इतनी वाणी मैंने लिखवाई कि जो सदा आप लोगों को काम देगी, काम दे रही है और देती ही जायेगी। सभी मेरा खेल हो रहा है। इस बच्चे का कुछ नहीं है। जो कुछ है यहाँ पर, मैं हूँ, ये ठीक बोलता

है, मेरे सिवाय इस पुतले के अन्दर कुछ नहीं है। अन्त में मैंने ही आप सबको अमृत पिलाया माई के रूप से। माई में और मुझमें भेद ही क्या है। माँ और मैं एक हैं। माँ और हम दो नहीं हैं। हम दोनों इस रूप के अन्दर से आप सबकी सेवा करते हैं। पहले भी जो वाणी बोली जाती थी हम ही बुलवाते थे, अब हम स्वयम् आप ही ये वाणी बोल रहे हैं। हमारा खेल ही ऐसा है। अब ये बच्चा हमसे अलग नहीं है। हम दोनों में मिलकर एक हो चुका है। कहने मात्र को अलग है। देखने मात्र को अलग है। जो इसमें और हममें भेद करेगा उसके हाथ कुछ नहीं आयेगा। मैं चाहता हूँ आप सदा इस बच्चे को हम दोनों का प्रगट रूप जानकर इसके साथ वैसा ही भाव रखा करो। मैंने इस रूप के द्वारा आप सबका जीवन उठा दिया है। आप सबकी बहुत धुलाई किया है। आप सबको कहाँ से कहाँ पहुँचाया है। अब आप सबकी duty बनती है, जिस रूप के द्वारा मैंने आप सबको इतना कुछ दिया है, उसका भूल कर भी किसी ने निरादर नहीं करना। उससे सच्चा प्रेम करना, उसका होकर रहना। ये ही आप सबको समझाना है। माँ, मैं और ये बच्चा हम तीनों एक हैं। हम तीनों में कुछ भेद नहीं रखना। ये सच्चाई किसी को भूलनी नहीं चाहिये। **मैं जो कुछ देता हूँ गुरु रूप से ही देता हूँ। आदि काल से ये मेरा नियम बना हुआ है। आप सबको भी जो कुछ दिया और आगे जो कुछ दूँगा, इसी रूप से दूँगा। इस बात को आप सबने अच्छी तरह से समझना है। जो मुझमें माँ में और इसमें भेद करेगा, वो भरमों में पड़ जायेगा, वैहमों में पड़ जायेगा, सब कुछ खो देगा।** मैंने ही आप सबके उद्धार के लिये अब ये रूप धारण कर रखा है। खेल देखते जाओ, आनंद मनाते जाओ, ये ही तुम्हें समझाना है बारम्बार। इस रूप के अर्पित होते जाओ, यहीं से सब कुछ मिलेगा।

जै मैय्या, जै अम्बे, जै भगवती,

शिव शम्भु हर हर हर

जगदम्बे हर हर हर

" जै मैय्या "

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

स्वास-स्वास सिमरुँ तुझको बार बार बलि जाऊँ।
तुझ बिन मेरा कोई न राघव जिसको मैं अपनाऊँ।।

भगवान के साकार और निराकर रूप में भेद नहीं है। साकार रूप का इतना जबरदस्त परमानंद है कि निराकार से जरा भी कम नहीं है। मनु जी ने लाखों बरस तपस्या की थी भगवान को पाने के लिए। जब श्री भगवान प्रगट हुए तो बोले माँग क्या माँगता है? तो सब ज्ञान-ध्यान भूल गए इतना आनंद आया वो स्वरूप देख कर कि सब कुछ भूल गये। बोले माँग क्या माँगता है भगवान कहते हैं। आप जैसा बच्चा होना। ज्ञान-ध्यान भूल गए इतना रस आ रहा है, आनंद आ रहा है उस परम आनंददायक स्वरूप को देख कर, बोले आप जैसा बच्चा होना। लाखों बरस तपस्या किया श्री भगवान बोले मेरे जैसा तो कोई और है ही नहीं मैं खुद ही तेरे घर आऊँगा। मेरे जैसा तो कोई और नहीं है, मैं तो अनूप हूँ दूसरा मेरे जैसा कोई नहीं है मैं स्वयम् ही तेरे घर आऊँगा। तू थोडे समय जा स्वर्ग में रह। फिर त्रेता में जन्म लेना, मैं राम बन कर तेरे घर आऊँगा तो ये है भगवान के साकार रूप की महिमा।

फिर देखो खर और दूषण की बहन की नाक लक्ष्मण जी ने काट दिया। उस गुस्से के कारण चौदह हजार राक्षस लेकर आये लड़ने। राम जी लक्ष्मण जी को कहते है सीता जी को लेकर गुफा में जा मैं इनसे निपटता हूँ। एक तरफ चौदह हजार राक्षस थे एक तरफ प्रभु राम अकेले खड़े थे। जब दूषण ने देखा राम जी को तो घबरा गया उसके शस्त्र हाथ से छुट गए। वाह! ऐसी सुन्दरता कहीं देखी नहीं, उसको दुश्मनी तो भूल गई। उसके मन में जो दुश्मनी थी, जो मैल था वो

भूल गया, शस्त्र उसके हाथ से गिर गए, वाह! ऐसी सुन्दरता कहीं देखी नहीं मन करता है इन आँखो से देखते रहें। सब वैर भाव खतम हो गया। फिर भी राक्षस बुद्धि थी पहचाना नहीं, खर को बोला जाकर इनको बोल अपनी स्त्री को हमें दे दो और हम तुमको छोड़ देते हैं। हम चौदह हजार राक्षस तुमको एक मिनट में खतम कर देंगे। अपनी स्त्री को हमें दे दो हम इनको माफ कर देंगे। वो चौदह हजार राक्षस उनकी सुन्दरता देख रहे हैं। खर आता है सरकार के पास – सरकार कहते हैं मैं आया ही हूँ तुम्हारे जैसे दुश्मनों को खतम करने तुम मेरे ऊपर तरस न करो। आओ लड़ो मेरे साथ। मुड़ कर गया बोले इसको मारने का जी नहीं करता ये मानता नहीं हम चौदह हजार वो अकेले। मारने की इच्छा नहीं होती इतनी सुन्दरता है। लड़ने को आगे बढ़े श्री भगवान ने एक तीर चलाया उसमें से चौदह हजार तीर निकल कर एक पल में चौदह हजार राक्षस स्वाहः हो गए।

श्री भगवान वन में जा रहे हैं आगे-आगे रामजी बीच में महारानी सीता जी, पीछे लक्ष्मणजी गाँव के लोग उनको देखते तो वहीं खड़े हो जाते, पानी भरने वाली स्त्रियाँ घड़े उठा कर जा रही हैं जैसे उनको देखती हैं टिकटिकी लग गई। वाह ऐसा कभी देखा नहीं वो जाकर मर्दों को बुला कर लाती हैं देखो जरा ऐसी मूरत देखी कभी। ऐसी सुन्दरता देखी कहीं। वो वन में जाते जा रहे हैं और मीलों आगे खबर पहुँच गई इतना सुन्दर कोई मनुष्य आ रहा है उसे देखते आँखें भरती नहीं। चारों तरफ से लोग इक्ठे होकर देखते जा रहे हैं।

नील सरोरुह नील मणी ।
नील नीर धर श्याम ।।

गोस्वामी जी ने बहुत ही सुन्दर कहा है। कैसा उनका स्वरूप है कि देख-देख कर आँखे भरती नहीं, मन भरता नहीं है। आज दीवाली का शुभ दिन है। इस दिन दयालु भगवान अयोध्या वापस आये, आकर राज तिलक किया। कई बार आप से चर्चा करते हैं, भारत के जितने लोग हैं चाहे वो किसी भी धर्म के हों, किसी भी जाति के हों, राम का अवतार नहीं भूल सकते। हमें हर रोज उनके

जीवन से कुछ न कुछ मिलता है। मर्याद पुरुषोत्तम अवतार था श्री भगवान का। मर्याद पुरुषोत्तम अवतार था, हर चीज़ की मर्याद रखी श्री भगवान ने। ऐसी मर्याद रखी कि कितनी चीज़ें देखने को मिलती हैं शांति की, आनंद की, जो केवल भारत में मिलती हैं दूसरे एक सौ दस देशों में और कहीं नहीं मिलती। हर दिन पच्चास सौ बार ऐसी बात होती है जिससे हमें खुशी मिलती है जो केवल उस वजह से है। प्रभु राम और हमारी माँ सीता ने हमारे लिए इतनी तकलीफ उठाई और ऐसी मर्याद संसार में कायम किया कि जब तक सूरज चाँद सितारे रहेंगे वो अटल रहेंगी। नहीं तो आनंद और रोशनी नहीं मिलेगी, इसी को समझने का है। राम का ऋण भारत का कोई भी वासी नहीं चुका सकता चाहे वो कुछ भी कर ले।

हमारा जो गृहस्थ जीवन है घरेलु जीवन है दुनियाँ में हिन्दुस्थान को छोड़कर और कही नहीं है। बाकी एक सौ दस देशों में आज शादी होती है ३-४-६ साल बाद तलाक होता है। बच्चों को पता नहीं माँ कौन है बाप कौन है। सब देशों का ये ही हाल है। पचास, साठ, अस्सी साल की उमर में एक दूसरे को छोड़कर नई शादियाँ करते हैं। किसी को अजीब नहीं लगता, यह तो जगह-जगह पर होता है। खाली हमारा ही एक देश है जहाँ हमारे घरों में इतनी पवित्रता है, इतना आनंद है, इतनी खुशी है, इसका कारण ये ही चीज़ है। वो सूरज जो लाखों बरस अयोध्या जी में चढ़ा वो आज घर-घर में प्रकाश दे रहा है। उसका प्रकाश आज लाखों बरस के बाद भी भारत के हर घर में देखने को आता है।

जो पहनावे सो ही पहनूँ ।
जित राखे तित ही रहाऊँ ।।
जहाँ बैठाए तिथ ही बैठूँ ।
बेचे तो बिक जाऊँ ।।

" जै मैय्या "

साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम
साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम

अहंकार अहंकार

जाने तेरो नाम लियो माँ सोई तोको पायो

ध्यान से सुनो। समझने की बात है। सभी साधना केवल एक मतलब के लिए की जाती है। अपने आपको गँवाने के लिए, अपने अहम् को खत्म करने के लिए, अपनी अलग सत्ता को सदा के लिए मिटा देने के लिए। यदि किसी साधना से ये काम नहीं होता तो वो साधना एकदम गलत है, हमें गलत रास्ते ले जा रही हैं। साधना करने का इसके सिवाय दूसरा कोई मतलब नहीं होता है। कोई भी साधना करो, किसी भी रास्ते से आओ मतलब एक ही है अपने आपको गँवाना, अपने आपको मिटाना, अपने आपको खत्म करना, अपने आपको खाक में मिला देना। अपनी अलग सत्ता रह ही न जाये, एक माँ रह जाये। बस, एक माँ के सिवाय दूसरा कुछ ना रहे। सब साधना करने का अर्थ केवल यही एक है। जितना-जितना हमारा अहम् कमजोर होता जाता है, निकलता जाता है उतना ही हम सच्चाई के नजदीक पहुँचते जा रहे हैं। जितना-जितना हमारा अहम् मजबूत है उतना-उतना हम सच्चाई से दूर हैं, अँधेरे में हैं, अज्ञान में हैं, अन्धकार में हैं, मोह की निद्रा में सो रहे हैं। "माँ के द्वार पर" ये पुस्तक सबेरे आप सबको दी गई है। शुरु से लेकर आखिर तक इस पुस्तक का एक ही अर्थ है कि माँ हैं, जीव नहीं है। माँ हैं, जीव नहीं है। जो कुछ है सो माँ हैं। जीवपना झूठ है। केवल एक माँ है। सत् माँ हैं। माँ के सिवाय और कुछ भी नहीं है। माँ मिल गयीं सत्य मिल गया। अब पाना क्या रह गया? सब संसार तो सत्य के अन्दर है। सत्य की इच्छा में चल रहा है, सत्य की मर्जी में चल रहा है, सत्य का बनाया हुआ है। सत्य पा लिया, माँ को पा लिया। संसार तो माँ का है, संसार जाता कहाँ है? इसी को समझना है।

किसी भी रास्ते से आओ, देखना यही है हमारा अहम् कितना खत्म हुआ। जितना-जितना हमारा अहम् खत्म होते जाता है उतना-उतना माँ का बास हमारे

हृदय में होते चले जाता है। जितना-जितना झूठ और अन्धेरा हमारे अन्दर से निकलते जाता है उतना-उतना प्रकाश हमारे अन्दर होते चले जाता है। इसको समझना है। जो अपना आप गँवाता है वो हरि को पाता है, माँ को पाता है। अपना आप गँवाये बिना उद्धार की कोई सूरत है ही नहीं क्योंकि ये अपना आप झूठ है। सच नहीं है। ये कल्पना मात्र है। स्वामीजी की वाणी में आता है, स्वामीजी की परम् पावन वाणी है – "एकै में है सर्व जगत्, एकै के आधीन अपनी कल्पित भिन्न सत्ता, करो एक में लीन।" अपनी कल्पित जो भिन्न सत्ता है वो कल्पना मात्र है, है नहीं। उसको एक माई में विलीन कर दो। तुम्हारी भिन्न सत्ता झूठ है, मिथ्या है। काहे को बने फिरते हो। सब कुछ तो माँ हैं। सब कुछ तो माँ हैं? काहे को बने फिरते हो। तो अपनी जो कल्पना मात्र से हमने अपने आपको बनाया हुआ है, हम कुछ हैं, हम ईश्वरी सत्ता से अलग कुछ हैं तो अपनी उस अलग सत्ता को उस अनन्त सत्ता में विलीन करो। Merge your separate individuality into the all pervading Divine Infinity. There is only one ego in the world. There is no place for the separate ego. The Divine ego, the Divine I pervades.

यदि आप मेरे को पाना चाहते हो तो एक ही रास्ता है अपने आपको गँवाओ, बच्चा बन जाओ। अपने आपको गँवाओ, बच्चा बन जाओ। बच्चा बनकर मेरे द्वार पर आओ। बच्चे के लिए द्वार खुल जाएगा। बच्चा बनकर सदा माँ के द्वार पर रहने का जतन करो। बच्चा बनकर दरवाजा खटखटाओ। Knock the door as a child the door of the Divinity, the door of the Holy Divine Mother. Knock the door as a child. The door is opened only for a child, never to an elderly one, never to an egoistic never. The entrance to the gate of Heavenly Divinity is too narrow for an individual ego. Only a tiny tot can enter, only a child can enter through the gate. बच्चा बनकर दरवाजा खटखटाओ, माँ द्वार खोलो, माँ तेरा बच्चा तेरे द्वार पर आया है। माँ द्वार खोलो। नन्हा बच्चा बनकर बोलो। माँ तेरा बच्चा तेरे द्वार पर आया है, माँ द्वार खोलो। बच्चा बनकर दरवाजा खटखटाओ, एक दिन माँ की दया होगी, द्वार खुल जायेगा।

द्वार खुलने के साथ जन्म मरण का चक्कर भी सदा के लिए खत्म हो जाएगा। That will be the end of the journey. The soul has reached its destination, its goal. अभी हम सब माँ के द्वार पर हैं। ये जो पुस्तक दी गई है "माँ के द्वार पर" अगला कदम माँ की पावन गोद है। माँ की पावन गोद में चलो। छुट्टी मिली एक कदम और। पहले द्वार पर पहुँचना होता है।

माँ द्वार पर तो ले आयी हैं अब अगला कदम माँ की पावन गोद में है। उसके लिए इंतजारी करना है माँ की दया की परन्तु याद रखो "माँ के द्वार पर" बार बार बोलते जा रहे हैं परन्तु आप में से किसी में संसारी वासनाएँ हैं तो वो तो नहीं पहुँचा। अभी किसी को मिट्टी और सोने में फर्क लगता है, किसी का हरे नोट देखकर मन ललचा जाता है, अभी नहीं, अभी दूर हैं। **किसी का मन यदि हरे नोट देखकर ललचा उठता है, माँ भूल जाती हैं, अभी मंजिल बहुत लम्बी है, अभी मंजिल बहुत लम्बी है। अभी हजारों बार शायद और आना पड़ेगा एक दो बार नहीं, हजारों बार। माँ की पावन गोद में वो ही जा सकता है जिसके लिए मिट्टी और सोना बराबर हो गया। जिसको मिट्टी का पहाड़ और रुपयों नोटों का पहाड़ बराबर लगता है। कुछ भेद नहीं है। भेद है तो माँ की गोद में नहीं जा सकते। हरगिज़ नहीं कोई सवाल ही नहीं है। याद रखो। इसमें समझौते की, compromise की कोई जगह नहीं है।** यदि दुनियाँ का अरब-खरब, करोड़ों अरब खरब रुपया भी सामने रख दिया जाए, आपने मुड़कर भी देखा, जाओ, अब चक्कर खाओ, यदि मुड़कर भी देखा तो माँ की गोद नहीं मिलेगी। स्टेट बैंक की सारी दौलत भी हमारे सामने रख दी जाए हमने मुड़कर भी देखा, देख लें ये State Bank है, १०-२० करोड़ हजार रुपया होगा। ऐसा भी किया, मुड़कर भी देखा, जाओ अभी चक्कर खाओ। अभी जन्म-मरण के चक्कर में पड़ो। नहीं होना मेरे को, मुड़कर देखना भी नहीं, माँ चाहिए मेरे को माँ चाहिए। याद रखो मैं गुरु के नाते बोल रहा हूँ कोई धोखे में नहीं रहे। ये दृढ़ पक्की बात है। यदि ऐसा करके भी देखा, मुड़कर भी देखा तो हम गुरु के नाम पर धब्बा हैं, वो कभी पार नहीं हो सकता। इस जगह माँ ने बिठाया है यदि आपके सामने

संसार के अरबों-खरबों रख दिये जाएँ, आपने मुड़कर भी देखा तो आप गुरु के नाम पर लानत हो, धब्बा हो, गन्दा भद्दा धब्बा हो। इसमें कोई compromise की जगह नहीं है। पार होने की कोई जगह नहीं है। बिल्कुल सच्चाई बोल रहा हूँ। माया के साथ Compromise की जगह नहीं है। जो Compromise करता है वो डूबता है। लाख, दो लाख, दस लाख, पचास लाख, अगर लाख करोड़ भी सामने रख दिया जाएँ मुड़कर भी देखा तो गए। ये मनुष्य चोला फजूल में पाया। गुरु के नाम पर बट्टा लगाया। माँ के चरणों तक, द्वार तक पहुँचकर भी अपना जन्म बरबाद कर दिया। इसमें कोई भी compromise की जगह नहीं है। कहीं भी बिल्कुल नहीं है। डँके की चोट बोल रहा हूँ। माँ की इच्छा से बोल रहा हूँ, माँ की आज्ञा से बोल रहा हूँ लेकिन याद रहे माँ की दया के बिना ये बात नहीं बन सकती। मनुष्य अपनी शक्ति से माया से नहीं उठ सकता है। माँ का आसरा लेकर माया से उठा जा सकता है। जीव अपनी शक्ति से नहीं उठ सकता है। माँ का आसरा लेकर, माँ का बच्चा बनकर ही जीव उठ सकता है। नहीं तो नहीं उठ सकता है। किसी को धोखे में नहीं रहना है कि माँ आसानी से पार लगा देंगी। **जब तक माया की जरा भी कशिश है तो पार होने की कोई सूरत नहीं है, कोई जगह नहीं है किसी भी हालत में।** समझना है इस बात को।

रचना के पीछे से देखो बोल रही हैं माँ। ...

मैंने एक अजीब बात देखी है। माँ आपको समझाती हैं तो ये शरीर शांत रहता है। जब कभी अपना बोलना होता है तो ब्लड प्रेशर हो जाता है। दिमाग में खून चढ़ जाता है, सहन नहीं होता है। इतने बरस से अपने साथी हैं, ये अभी भी माया नहीं छोड़ते। धन्य है वो जगत् जननी माँ जो बरसों से बोल रही हैं और सहन करती हैं। मेरे से सहन नहीं होता है। मैं जब बोलता हूँ तो शरीर में जोश आ जाता है, सहन नहीं होता है। इतने बरसों से पतित पावन बाबा के चरणों में आकर अभी भी पैसे का मोह नहीं छूटा, धन-दौलत का मोह नहीं छूटा। ये सोचकर भी सहन नहीं होता, बरदाश्त नहीं होता। धन्य है वो जगत् जननी माँ जो आपको हर रोज समझाती हैं, कितने प्यार से समझाती हैं। वो ही चीज़ हर

रोज बताती हैं फिर भी नाराजगी नहीं आती है। ईश्वर-ईश्वर होता है। ईश्वर की दया और करुणा है ये। समझने की बात है। उस पतित पावनी माँ की दया को समझो। हमारे लिए कितनी दया है उनके मन में। देखा आप लोगों ने इसको एक पल ढील दिया तो कैसे उड़ा है? कितने प्रेम से मैं आप लोगों को रोज समझाती हूँ। ये बात सच है। सात बरस बीत गये। जो ये कहता है ठीक कहता है। मुझमें और इसमें भेद क्या है? सात बरस से मैं ही समझा रही हूँ आप सबको। एक ही रास्ता बताया जा रहा है। कितने दु:ख की बात है, सात बरस समझाने के बाद अभी भी माया छूटी नहीं, माया का प्यार छूटा नहीं। माँ के लिए सच्चा प्यार मन में उत्पन्न नहीं हुआ है यदि माया के लिए प्यार है तो अभी मन में माँ के लिए प्यार नहीं है। झूठी लगन है। माँ को झूठी लगन नहीं चाहिए। **माँ सच्चा प्यार माँगती हैं। सच्ची भक्ति माँगती हैं। सच्ची शरणागति माँगती हैं। माँ आप सबका अपना आप माँगती हैं। अपना आप दे सकते हो, चढ़ा सकते हो तो आपका उद्धार हो सकता है। ये बात बिल्कुल सत्य है।**

मेरा ये दरबार केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो अपने आपको चढ़ा सकते हैं। जो माया के पीछे दौड़ते हैं, संसार के पीछे पागल हो रहे हैं वो मेरे से क्या पाएँगे? मैं यहाँ पर, जानते हो, मैं यहाँ पर क्या देती हूँ? **अपने इस दरबार में मैं अपने आपको देती हूँ। बच्चों का अपना आप लेकर वापसी में मैं अपना आप उनको दे देती हूँ।** समझने का है। अपना आप अर्पित करो। अरे भाई, बाहर है क्या? अन्दर का आनन्द एक पल के लिए भी चख लिया तो दीवाने हो जाओगे। फिर बाहर आना नहीं चाहोगे। बाहर देखना नहीं चाहोगे। बाहर आना अखरेगा। ये जीवन भारी हो जाएगा। बाहर की हर स्थिति परेशान करने लगेगी। संसार की चीज़ें, संसार की बातें सहन नहीं होंगी। एक लगन लग जाएगी अन्दर की, माँ की पावन गोद की। इसके सिवाय कुछ अच्छा नहीं लगेगा। माँ की गोद का अमृत रस पियो। मैं ही अमृत रस का सार हूँ। आज मेरा पावन दिन है। आज फिर मैं नये सिरे से आपको बुला रही हूँ, आ जाओ इस अमृत सागर में। **माँ से सच्चा प्यार करो, सच्चा प्रेम करो। अपने आपको मिटा डालो। आ जाओ माँ की परम् पावन गोद में। माँ तुम्हारा इन्तजार कर रही हैं। लाखों जन्म बीत गये**

माँ से जुदा हुए, कब वापस घर आओगे बच्चों? कब वापस घर आओगे? तुम्हारी माँ तुम्हें बार-बार बुला रही हैं। बच्चों घर वापस आ जाओ अपनी माँ की पावन गोद में आ जाओ। अमृत रस पिओ अमर हो जाओ। अमृत रस पियो अमर हो जाओ। अब मैं आज ही तुमको अमृत पिलाती हूँ। आओ मेरी गोद में, छोड़ दो इस झूठी माया को, छोड़ दो इस झूठे संसार को। आ जाओ अपनी माँ की पावन गोद में। बाहर कुछ नहीं है। तुम्हारे लिए सब कुछ माँ की गोद में है। अमृतमय गोद में है। आओ आकर माँ में मिल जाओ। माँ में मिलकर एक हो जाओ। यही तुम्हारी ultimate destiny है। जो एक दफा इस गोद में आ जाता है फिर वापस नहीं जाता। वो अमृत रूप ही हो जाता है।

" जै मैय्या "

पतित पावन साईं

अब तो जान लियो है मैंने साईं मेरे रखवारे हैं।
साईं खिलायें साईं पिलायें वो ही पालनहारे हैं।।
अंग संग हैं रहते हरदम करन करावनहारे हैं।
साईं मेरे सर्वस्व स्वामी मुझ को सब से प्यारे हैं।।
सब आशा अब छोड़ के हम तो पड़े साईं के द्वारे हैं।
साईं शरण हम साईं हवाले वो ही तारनहारे हैं।।
पतितों को वो पार लगावें उन के खेल न्यारे हैं।
भक्तों के बस एक सहारे साईं अपरम्पारे हैं।।
अब तो जान लियो है मैंने साईं मेरे रखवारे हैं।
साईं मेरे रखवारे हैं साईं मेरे रखवारे हैं।।

" ॐ श्री साईं "

शक्ति सत्स्वरूप

अंदर के पट खोलने का मतलब क्या है? **अंदर के पट जब खुल जाते हैं तब जीव गुम हो जाता है। माँ रह जाती हैं। माँ बिना कुछ भी नहीं रहता** इसको समझने का है। **अंदर के पट किसके खुलते हैं? जो बच्चा बन जाता है। बच्चा कौन बनता है?** जो पूरे मन से अर्पित हो जाता है। **पूरे मन से अर्पित कैसे होते हैं? माँ की दया से। माँ की दया के बिना कोई अर्पित नहीं हो सकता है। ॐकार अक्षर ब्रह्म है। जो ॐकार अक्षर ब्रह्म का अपने हृदय में चिंतन करता है। वो ॐकार स्वरूप हो जाता है। ॐकार का चिंतन कैसे किया जाता है? दो प्रकार से पहला ॐकार की नाहद धुनि अंदर से होती है वो सुनना दूसरा ॐकार को प्रकाश रूप में देखना।** इसे अपने हृदय गुफा में देखना। माँ की दया से ही किसी भाग्यवान को ॐकार की उपासना मिलती है। तो भाव के साथ लेते जाना, ॐकार को नाद के समान सुनना बहुत उत्तम है परन्तु जब तक ये सुनाई नहीं देती तब तक बात नहीं बनती। नाद और प्रकाश ब्रह्म के रूप हैं। कोई नाद का अभ्यास करता है, नाद का अभ्यास गुरु ज्ञान से होता है। सत्गुरु ने जिनको पिछले जन्मों में चलाया होता है उसको ऐसा अभ्यास होता है। उसे नाद ब्रह्म का अभ्यास कराया जाता है। जिसे प्रकाश शक्ति का अभ्यास कराते हैं, उसको ज्योति स्वरूप ब्रह्म का अभ्यास होता है। ये भी नहीं कह सकते कि कौन सा अभ्यास आगे है कौन सा अभ्यास पीछे है। ये भी नहीं पता कौन से अभ्यास से वो हमें आगे कर दें। इससे भी परे **शक्ति उपासना** है। जो अरबों-खरबों में से किसी एक को मिलती है। **शक्ति उपासना से जीव का नामो निशान**

मिट जाता है। जीव करने वाला नहीं रहता शक्ति आप रह जाती है। शक्ति उपासना सबसे ऊँची उपासना है। शक्ति उपासना ही ब्रह्म है। शक्ति उपासना में ना तो जीव रहता है ना कोई प्राणी रहता है। केवल शक्ति आप रहती हैं। शक्ति उपासना बहुत मधुर और आनंद दायक उपासना है। शक्ति उपासना में गढ्ढे नहीं हैं। वहाँ गिरने की जगह नहीं है। शक्ति उपासना करते-करते जीव अपने आप खतम हो जाता है। जीव रहता ही नहीं। कोई रुकावट आती ही नहीं। जीव सदा आनंद में रहता है। कोई नियम नहीं रहता। कहीं भी पड़ा रहे वो शक्ति माँ की गोद में है। शक्ति की उपासना अध्यातम में सबसे अंतिम की उपासना है। वेद-पुराण शक्ति की उपासना को नहीं समझ सकते। शक्ति उपासना परम आनंदमय उपासना है। शक्ति उपासना में शक्ति के सिवाय कुछ रहता ही नहीं। सभी ओर शक्ति का अभ्यास होने लगता है। अपने अंदर, दूसरों के अंदर, सर्व जगत् के अंदर उनसे भी परे, उनसे भी पीछे। शक्ति उपासना गुरु दया से मिलती है। शक्ति उपासना में अपने आप का भास गुम हो जाता है। शक्ति उपासना अमृत उपासना है। शक्ति की उपासना से जीव अमृत मय हो जाता है। अमृत रूप हो जाता है। क्या बताऊँ शक्ति की महिमा बताने के लिए शब्द ही नहीं मिलते, वाणी ही नहीं मिलती। शक्ति उपासना इतनी ऊँची उपासना है मन, वाणी से परे है। बुद्धि से भी परे है। करनी से भी परे है। शक्ति उपासना से जीव अत्यंत निर्मल हो जाता है। शक्ति उपासना में कोई नियम नहीं है। दया है गुरु की जिस पर हो जाए। फिर जगत् की कोई कीमत नहीं रहती। जगत् लोप होना शुरु हो जाता है, शक्ति माँ रह जाती हैं। घट में, बाहर में, आसपास में, सब जगह में, जर्रे-जर्रे में, कोने-कोने में, शक्ति माँ का भास होता है। जहाँ शक्ति माँ है वहाँ सब कुछ है। वहाँ किसी बात की कमी नहीं है। किसी चीज़ की कमी नहीं है। बाहर से कर्म पूरा जोर देता है, अंदर से वो दया भरपूर देता है।

शक्ति का खेल अनोखा है। उसमें कुछ नियम नहीं है। शक्ति के खेल में जो चाहे सो करो सब माँ के हाथ में है। शक्ति को अनुभव किया जा सकता है, बोलना या बताना अत्यंत कठिन है। शक्ति के अनुभव से शक्ति में गुम हो जाते हैं। शक्ति

में खो जाते हैं। शक्ति की गोद का रस अमृत पीते हैं। वो एक ऐसा रस है जो वाणी के परे है, वाणी में नहीं लाया जा सकता। शक्ति ॐकार स्वरूप है। शक्ति सब कुछ है। शक्ति में से कोटि ब्रह्मण्ड़ उपजे हुये हैं। शक्ति ही सब को चला रही है, सब जीवों को, सब देवी-देवताओं को, सभी महान शक्तियों को, सूरज, चाँद, सितारे सभी ओर शक्ति का खेल है। शक्ति के बिना कुछ भी नहीं है। शक्ति को सहन करना हर एक का काम नहीं है। जब तक हृदय शुद्ध और निर्मल नहीं हो जाता तब तक शक्ति को जीव सहन नहीं कर सकता। इसीलिए कहा जाता है – शक्ति अभ्यास नहीं है, शक्ति देन है। शक्ति देन है माँ की जिस को मिल जाए। जिस पर माँ की कृपा हो जाए। समझने का है।

जो कुछ भी बताया सब गम्भीर है। समझने की चीज़ है। मनन करने की चीज़ है। मन ही मन शक्ति को नमस्कार करो, मन ही मन में अपने गुरु को नमस्कार करो। **गुरु शक्ति का प्रगट रूप होते हैं। गुरु दया के बिना शक्ति में मिलन नहीं होता है।** कभी भी, किसी भी करनी से शक्ति में मिलन संभव नहीं। इस वाणी में शक्ति का वर्णन किया गया है। जो सच्चे मन से, पूरे भाव से पढ़ेगा उनका कल्याण होगा। सब शक्ति का खेल है। शक्ति की महिमा सुनने से ही, वर्णन करने से ही, पढ़ने से ही जीव का कल्याण होता है।

"जै मैय्या"

नारायण को भजन कर जीव अमर हो जाएँ।
नारायण को सिमरते अन्त परम् गति पाएँ।।
नारायण नारायण साईं नारायण।
भज मन नारायण नारायण साईं नारायण।।
बोलो नारायण नारायण साईं नारायण।
सिमरो नारायण नारायण साईं नारायण।।

"ॐ श्री साईं"

सत् सेवा मन लागे

जो ये समझता है मैं करने कराने वाला हूँ वो महामूर्ख है। शक्ति के बिना क्या हो सकता है? माँ ही सब जीवों को जीवित कर रही हैं, सबका पालन पोषण कर रही है। सबसे कर्म करा रही हैं, जब तक यह बुनियादी सच्चाई नहीं है, basic truth नहीं है, तब तक ही जीव भरमाते जाता है। मैं कर रहा हूँ यह सबसे बड़ा पाप है, अज्ञान है। करन-करावन वाली माँ को भूलकर अपने को कर्ता मान बैठा है। कर्म बंधन गले में डाल दिया। कर्म बंधन नहीं, विष भरे नाग को गले में डाल दिया। जो जन्म-जन्मांतर उसको विष पिलाते रहता है। समझ नहीं आई मुर्दा क्या कर सकता है जो कुछ है शक्ति माँ हैं। शक्ति से ही सब कुछ होता है। शक्ति माँ का भजन करना है। माँ को हृदय में बसाना है। माँ बिना जीव किसी काम का नहीं है। अर्पित हुए बिना बात नहीं बनती है। अर्पित होए तो जीव धीरे-धीरे बच्चा बनता है। सबसे पहले निजी इच्छा को, self will, को छोड़ना पड़ता है। जब तक अपने आपका त्याग नहीं किया तब तक बात नहीं बनती है। भूले से भी अपने को कुछ मानना नहीं चाहिए। जब तक जीव अपने को मिटाता नहीं है तब तक कल्याण नहीं हो सकता है। बड़ा बनना खतरे से खाली नहीं है। साधारण जीवन व्यतीत करना चाहिए। सच्चाई में चलना चाहते हो तो, अध्यात्म में चलना चाहते हो तो, सादगी में रहो सादा जीवन व्यतीत करो। सादा जीव ही माँ को पा सकता है। सादा जीव के अंदर ही माँ का बास होता है। जो सदा माँ में रहता है वो ही माँ की कृपा को पाता है। जब भी हमने अपने आपको अलग करना शुरु किया किसी भी चीज़ में तो अहंकार आना शुरु हो गया। वहाँ माँ का प्रकाश कभी नहीं आ सकता। सबसे मिल कर रहना है, दूसरों की धूल बन कर रहना है। किस पर कितनी दया हुई है यह जानने के लिए देखो कितना वो दूसरों की धूल बना हुआ है, कितना अपने आप को त्यागा है। जितना अहंकार है, उतना ही अहंकार कायम है जरा भी खाली नहीं हुआ तो बात अभी बनी नहीं। भरा घड़ा उछलता नहीं है जो घड़ा खाली होता है वो ही उछलता है।

सेवा करने को लोग मिल नहीं रहे हैं, सेवा करने वाले कोई आगे आ नहीं

रहे हैं, जगत् की सेवा करनी है। कुछ लोगों को खड़ा करना पड़ेगा सेवा में लगाना पड़ेगा, सेवा का कोई मौका जाने नहीं देना चाहिए। कहते सब हैं पर अपना बनता कोई नहीं है। मुहँ से बोलने में कुछ नहीं रखा है। इतनी भारी सेवा की जरूरत है। कोई सामने नहीं आता है। घर में बैठकर सब कुछ करने को तैयार हैं। बाहर जाने को तैयार नहीं रहते हैं। यहाँ घर पर बैठ कर आराम से सब करने को तैयार हैं। बाहर की कोई तकलीफ नहीं उठाते हैं, अपने इष्ट के लिए कोई तकलीफ नहीं उठाता है। तुम हमारे सगे नहीं हम भी तुम्हारे सगे नहीं हैं। एक दिन भी जाया नहीं करना चाहिए। एक-एक समय की कीमत है। जो सेवा करेगा वो पार हो जाएगा। एक जगह सेवा नहीं हो सकती बाहर जाना पड़ेगा, दूर-दूर जाना पड़ेगा। इसके बिना कोई चारा नहीं है। ऐसी सेवा नहीं होती जैसे तुम कर रहे हो। बाहर जाने के लिए सबको तैयार रहना चाहिए। यहाँ सेवा बहुत हो चुकी है यहाँ सेवा का मारजिन नहीं है। करने कराने वाली मैं हूँ, तुमने खाली दयानतदारी से तैयार हो जाना है। करने-कराने वाली मैं हूँ। सेवा नहीं करोगे तो तुम दोषी हो जाओगे। बारह बरस से मैंने तुम चालीस-पचास की सेवा के लिए ये दरबार नहीं लगाया है, ये वाणी नहीं बोली है। सर्व जगत् के लिए बोली है। एक-एक पल की कीमत है। काम बहुत है समय कम है। हुक्म में रहने से ही दया मिलती है। दयाहीन जीव नाकारा होता है। उठो कदम आगे बढ़ाओ आगे बढ़ो जगत् खतरे में है। माँ का जंत्र बन कर हमने जगत् की सेवा करनी है। घर का आराम मत सोचो। घर की जिम्मेदारी मैं सम्भालूँगा। भिक्षु बनो, दस-पचास selfless काम करने वाले हों तो दुनियाँ की हालत बदल सकती है। अपने self interest को छोड़ना पड़ेगा। बातें बड़ी-बड़ी बनाते हैं सेवा करने को कोई तैयार नहीं है।

" जै मैय्या "

जै काली जै साईं मैय्या हम हैं बालक तेरे।।
आनन्दकाली आनन्द साईं तुझ में सूख घनेरे।।

"ॐ श्री साईं"

भगत् भयहारी माँ

जै हो जै दुर्गा महारानी।
तू ही गौरी मात भवानी।।
बच्चों की तू रक्षा करती।
भक्तों के भण्डारे भरती।।

सर्व जगत् को पावन करती।
पतित जनों के पाप है हरती।।
नाम तेरो है मंगलकारी।
तू है मात भगत् भयहारी।।

वेद पुरान तेरो गुण गावें।
वै भी तेरो पार न पावें।।
जो जन शरण तेरी हैं आवें।
माया में नाहीं भरमावें।।

नाम तेरो ले लेकर माता।
पापी भी भव से तर जाता।
हे माता हम बालक तेरे।
काटो जनम मरण के फेरे।।

''ॐ श्री साईं''

सेवा धर्म

नादान जीव यह सोचता है मैं करता हूँ। करने कराने वाली माँ हैं, मुर्दा क्या कर सकता है? एक मुर्दे में और तुझ में जो भेद है, फर्क है सो मैं हूँ। इसको दृढ़ करो फिर सच्चाई की झलक पड़ेगी, फिर सच्चाई समझ आयेगी। सभी मुर्दों को चलाने वाला मैं हूँ, बताने वाला भी मैं हूँ और अंत में रक्षा करने वाला भी मैं ही हूँ। मेरी माया ने सबको बाँध रखा है। सबके गले में फाँसी पड़ी हुई है। कोई उससे छुट नहीं सकता। छुटता है तो मेरी दया से छूटता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है छूटने का। खेल तमाशे में यह सारा जगत् चल रहा है। भजन करने से हम भगवान को जान सकते हैं। भजन कैसा होना चाहिए उसके लिए कुछ जानने की जरूरत है। एकदम दीन होकर। भजन कौन सा फल देता है? दीन हो जाना, एकदम दीन हो जाना और फिर भजन करना। धूल बन जाना एक दम दीन। भजन शुरु करने से पहले अपने आपको सबकी धूल बना देना। सबकी धूल। अपने आप को माँ के शरणागत कर देना। निजी इच्छा छोड़ देना। तेरा दिया मीठा लागे। यह भाव रख कर भजन करने बैठेंगे तो भजन तुरन्त फल देगा। यदि हम वासनाएँ रखते हैं भाव नहीं है तो फिर भजन नहीं होता।

वासनाओं का त्याग, माँ के अर्पित होकर रहना, **तेरा भाना मीठा लागे, तेरी इच्छा पूरण हो** हर बात में तेरी इच्छा पूरण हो और भी बहुत जरूरी है बच्चा बनना। बच्चा बने बिना जीव का उद्धार नहीं हो सकता है। माँ को केवल बच्चा ही प्यारा होता है और कुछ नहीं। मैं ही माँ हूँ। संसारी माँ के तीन-चार सगे बच्चे होते हैं लेकिन सर्व जगत् मेरी संतान है। सब बड़ा बनने की सोचते है आसमान को हाथ लगाने की कोशिश करते हैं। मंजिल तो ये है नीचे अपने चरण दिखा रहे हैं धरती पर रहो नीचे अपने चरण दिखा रहे हैं। जाना तो नीचे

है और जा ऊपर की तरफ रहे हैं। इसका अर्थ समझना है। इसका अर्थ है चौरासी, इसका मतलब एक ही है अपना उद्धार छोड़ कर, अपना कल्याण छोड़ कर चौरासी की ओर जा रहे हैं। रावण, कुम्भकरण, मेघनाथ हर साल उनको जलाया जाता है। मेरे बच्चों को मैं सारी दुनियाँ की दौलत दे दूँ तो डरते हैं। माँ-माँ-माँ।

फकीरों की दुनियाँ अलग है, अमीरों की दुनियाँ अलग है। दोनों का standard अलग-अलग है। फकीर मिट्टी में मिलना चाहता है अमीर आसमान पर चढ़ना चाहता है दोनों का मेल कैसे होयेगा, नहीं हो सकता। जब तक बात नहीं बनती। मायावी जीव ऊपर जाने की सोचता है। अध्यात्मिक जीव मिट्टी में मिलने की करता है। कैसे मैं खाक हो जाऊँ, मिट्टी में मिल जाऊँ दोनों की मंजिल जुदा-जुदा है। एक ही मंजिल है माँ। एक की मंजिल है चौरासी। दोनों अपनी-अपनी जगह बढ़ रहे हैं। माया आग है जो जीवों को जलाकर खाक कर देती है। ये जो नोट पकड़-पकड़ कर तुम खुश होते हो दरअसल नर्क की अग्नि नहीं जलाती यह नोट जलाते हैं, जीव को। श्मशान की अग्नी भी हमें नहीं जलाती नोट जलाते हैं। भारत की आधी आबादी भूखी सोती है Income tax से छुट सकते हो, मेरी नज़रों से कहाँ छुटोगे। मैं देख रहा हूँ सबको अंदर से, कोटि कोटांग आँखों से, कईयों के लिये यमराज हूँ, कईयों के लिये देवता हूँ। दोनों मैं हूँ। मैं पूर्ण सच्चाईयाँ बता रहा हूँ। दो शब्दों में बताता हूँ। मैं सच्चे प्यार का भूखा हूँ और ये भी बताऊँ सच्चा प्यार बड़ा नहीं दे सकता है। सच्चा प्यार बच्चे के सिवाय कोई नहीं दे सकता तुम भी नहीं दे सकते। मैं ईश्वरों का ईश्वर हूँ। कालों का महाकाल हूँ। सब कुछ मैं हूँ मेरे बिना कुछ भी नहीं है। मुझे जानने के लिए ब्रह्मा तक को तप करना पड़ा। कोई मुझे जान नहीं सकता। जिसको कोई नहीं जानता उसको केवल एक बच्चा जान लेता है। जिसको ब्रह्मा, विष्णु, महेश नहीं जान सकते उनको एक नन्हा बच्चा जान सकता है।

माँ आई हैं नमस्कार करो भगवती महाकाली आई हैं। अमृत वचन बोल रही हैं। मैं ही सर्व जगत् की माँ हूँ और शक्ति भी मैं हूँ। सर्व जगत् की माँ भी मैं हूँ, शक्ति भी मैं हूँ। माँ बनकर बच्चों की रक्षा करती हूँ। बच्चों को अपने सीने

से चिमटा कर रखती हूँ। शक्ति रूप से मैं जीवों को अपनी माया में फँसा लेती हूँ। जगत् में आकर जो इस मन मोहनी माया में फंस जाता है वो अपने लाखों जन्म बर्बाद कर देता है। एक अजीब दृश्य दिखा रही हैं। एक बड़े आदमी को दिखा रही हैं। पचास-साठ बरस का है तुम सोचते हो ये माँ की गोद में बैठ सकता है। वो ही जब दो-चार बरस का था तो माँ अपनी गोद में खिलाती थी। जब बड़े हो जाते हैं तो माँ की गोद में नहीं खेल सकते। यह कुदरत का बनाया हुआ नियम है। बड़ा कभी माँ का सोच सकता है, दिन-रात माया का सोचता है। माँ गुस्से में आई गई हैं – पहले तो जिसको अपनी माँ ही भूली हुई है जिस माँ ने जन्म दिया है। वो कोटि जन्मों में भी मुझ तक नहीं पहुँच सकता। बड़ों को माँ याद नहीं आती दिन-रात माया ही याद आती है। जिसका खेल है जिसकी दया से हम सब कुछ पाते हैं उसी को भूल जाते हैं। मैं भी लम्बी डोरी देती जाती हूँ, तू कर ले कितना पाप करना है। एक दिन पापों की अग्नि में तू जल जाएगा। बच्चे बनो। **बड़ा बनना सब अनर्थ की जड़ है।**

माँ बोल रही है। शक्ति मैं हूँ तूने जो कुछ पाया शक्ति कि दया से पाया। मुर्दा क्या पा सकता है। संसार में जिसने जो कुछ पाया मेरी दया से पाया, शक्ति की दया से पाया जिसके कारण सब कुछ पाया उसी को छोड़ देना महामूर्खता है। **अपने आप को तोड़ दो**। तोड़ो-तोड़ो अपने को तोड़ोगे तो मुझमें मिल जाओगे। टूट जाओगे तो मुझमें मिल जाओगे। माँ ने दूसरा रूप धारण कर लिया। पांडिचेरी की माँ का। फ्रेंच मदर का Brake, brake, brake there is no other way. There is only one way. Brake break, break, break thy self. जब तक टूटोगे नहीं तब तक माँ को पाओगे नहीं। Brake thy self and merge in Me, I am all.

We all are one. Baba and I and all other manifestations are the supreme spirit. हुक्म दे रही हैं माँ अगर तुम्हारे कर्म पूरे नहीं कराऊँगी तो तुम्हें पार कैसे लगाऊँगी। मैं और बाबा एक हैं। ये दरबार बड़ा बनने का नहीं है, खाक होने का दरबार है। बड़ा बनना है तो दूसरी जगह से आओ वहाँ से मैं सब कुछ तुम्हें दूँगी। ये जगह बड़ा बनने की नहीं है। ये जगह मेरी खेलने की है बच्चों

के साथ। यहाँ मैं अपने बच्चों के साथ खेलती हूँ। ये जगह मेरी खेलने की है बच्चों के साथ, बड़ों के साथ नहीं। दिखा रहे हैं एक बच्चा बैठा है चारों तरफ नोट ही नोट हैं ये कुदरत का नमुना क्या पायेगा मेरे से। ये मेरे खेलने की जगह है नोटों-वोटों को छोड़ कर मेरे पास आओ। इसीलिए चार जगह बनाई है जब तक चार साष्टांग नहीं करोगे तब तक मैं कुछ नहीं दूँगी। चार जगह साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करोगे तभी मैं कुछ दूँगी। तब तक कुछ नहीं दूँगी। साष्टांग प्रणाम करके आओ, अपने आप को मिट्टी में मिला दो। आते लाखों हैं पाता कोई-कोई है। पांडिचेरी में लाखों आते हैं पाया किसी-किसी ने। मेरा जन्म फ्रांस में हुआ चौदह बरस की थी तो खींची यहाँ चली आई अरविन्द के पास। साथ में काम करते थे उनको बोलना नहीं पड़ा, जगत् में एक जागृति दिया, फिर जगत् तेजी से गिरावट की ओर जा रहा है। हम चाहते हैं फिर से जगत् में प्रकाश हो जगत् में प्रकाश लाने के लिए हमने बहुत सामग्री दिया है। प्यासी आत्माएँ इस सामग्री को पाने के लिए तड़फ रही है। गाँव-गाँव, शहर-शहर में तुम्हारा काम है मेरी दी हुई सामग्री को मेरे बच्चों तक पहुँचाना। तुम्हारा काम है तुम सच्चे मन से अपने पन को छोड़ दो तुम्हारा संकल्प चाहिए। करूँगी मैं आप, खेल मेरा होगा नाम तुम्हारा होएगा। बहुत सुन्दर सरल भाषा में इतना कुछ दिया है। एक बच्चा भी, एक देहाती भी, एक गाँव वाला भी समझ सकता है। चाहते हो तुम्हारी मदद करूँ हर तरह से। तुम सेवा करो मैं तुम्हारी पूरी रक्षा करूँगी। तुम्हारे संस्कार काटूँगी। सत् सेवा जैसी कोई सेवा नहीं है। सत् सेवा, सत् का प्रचार इस जगत् में सत् सेवा जैसी कोई चीज़ नहीं है। सत् सेवा से जीव उठता है। सत् सेवा करो, सत् के लिए निकलो। जो नहीं जाएगा, जो हुक्म तोड़ेगा उसके साथ मेरा कोई संबंध नहीं रहेगा। हुक्म का पालन करना ही है। मेरा संदेश मेरे बच्चों तक पहुँचाना ही है। कोई पीछे ना रहने पाए।

" जै मैय्या "

साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम
साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम साईं राम

अमृत वचन

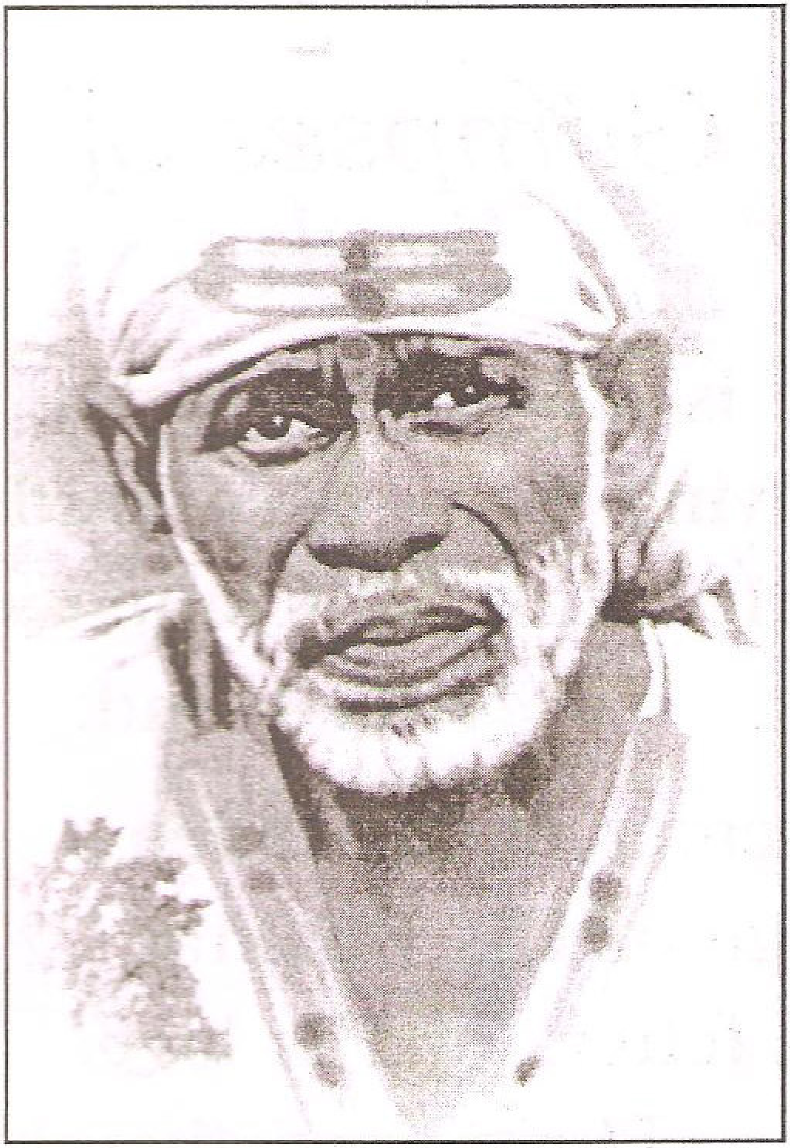

तुम्हारा साईं तुम्हें पुकार पुकार कर कह रहा है। एक एक स्वास की कीमत डालो। गिन कर स्वास लाए हो। एक स्वास भी नाम के बिना जाने न पाए।

" ॐ श्री साईं "

Glimpses of Truth

None is like my Lord Sai
So loving, benign, so kind
All Merciful, All Compassion
Him I find.

Redeemer of the fallen
Refuge of His Bhaktas
With fetters of His love,
Their Lord they bind.

'I am His, He is mine'
This thought must ever
Permeate my mind.

"Om Sri Sai."

OUR HEART - OUR SOUL

Beloved Gurudev Sri Anand Saiji said, when The name of Baba, The name of your Gurudev, The name of Divine Mother brings tears to your eyes – know that your Sai is not far away now. He is just a few steps away, very near to you. Why these tears? The tears of love, immense love for your Beloved Baba. In reality it is Baba's Love for you which brings tears into your eyes. We only reflect a fraction of The Mother's Love for us. It is possible for you to love Baba only when He loves you. When does He loves you? He loves you when you go to Him as a child. When you don't go to Him for any favours. He is pleased by your *Nishkam Bhakti* and His Motherly love starts enveloping you. He starts to take care of you. It is then The Light of His Love enlightens you and you start loving Him in the true sense. You move one step towards Him He moves nine steps towards you. Yes, pure and unadultrated love for Baba, takes you miles and miles on, in the spiritual path. But love should be for loves sake. Our Beloved Gurudev Sri Anand Saiji taught us to love Baba for love's sake. He said don't go to Shirdi, don't go to Baba as a customer, giving something to get something. Don't make with Baba a business deal. Mercenaries will get equal to what they give. Go to Baba as His child, He impatiently awaits such children. He welcomes them to His Bossom. His love has no bounds for such children.

Rememberance of Beloved Papa takes us back to Chakwal now in Pakistan. Beloved Papa took birth here on 16th January 1919 in Chakwal, District Jhelum, West Punjab (now in Pakistan). His birthdate and time coincides with that of Sri Guru Govind Singh ji,

the tenth Sikh Guru. His father, Sri Bhagat Beliramji and mother Subhadra Deviji were very pious souls. The child was aptly named MANOHAR – one who captivates the heart. From an early age He was particularly fond of listening to stories of Gods and saints and loved holy pictures displayed in His house. Many saints graced this household from time to time. At the age of eleven years, child Manohar was intiated by Baba Sai Nath who came to that village in the form of a wandering mendicant. For fourteen days, the regal, saffron attired sage stayed at Santpura in Chakwal, baptised the blessed child with the holy mantra and introduced Him to meditation to lead a God centered life.

He received His second initiation from revered Guru Swami Sitaramdas ji Maharaj at Nagpur. Sri Manohar had His base in Baba Sai Nath of Shirdi. Baba was the focus of His veneration. He saw Baba in every form of God. His love for Baba was so immense that at times He was unable to bear His seperation. He would pray to Baba for a glimpse and if not fulfilled He used to bang His head against the wall and cry like a child to have a glimpse of His Mother Sai. When the urge is immense, love is so true than how can Sai Maa stay back. Baba took physical form several times to meet His Amrit Putra Sri Manohar. In October, 1970 Sri Manohar's devoted wife, Yash passed away after brief illness on the wedding day of their son Jayant. He faced this loss with equanimity and no complaints. On 28th January 1973 Baba Sai Nath renamed His child as Sri Anand Sai.

While He preached *Nishkam Bhakti* still we do remember how He saved us from our adverse *Karmas*. Knowingly or unknowingly we had His protection from physical strains also. There are numerous

examples to quote which show that He took our *karmas* on Himself. Before we move to His Divine Powers let us just peep into His Divine Actions which we very rarely see these days. He intiated very few souls. Initiation was done individually. No mass initiation was done. Generally, the one who was selected for initiation was required to bring garland, a coconut, prasad and one rupee twenty five paisa. First the selected child was asked to garland Gurudev thereby accepting Him as his Guru and offering himself in totality at His Lotus Feet. Then offering one and quarter of a rupee and coconut to Him. Then Beloved Papa initiated His child while all others present chanted Baba Sainaths mantra. Mantra was given in the ear of the one who was being initiated so that no one else could hear it. After initiation the coconut and one and quarter of the rupee was returned as prasad to the devotee. Beloved Papa then offered prasad to His child and rest of it was distributed amongst the gathering. He never took a penny from any of His devotees on any occasion. Every holy day was celebrated in darbar and langar was served to all. Be it Ramnavami, Janmasthmi, Navratree, X-mas, Ram Vivah, Baba Taj's Urs, Gurunanak Jayanti, Diwali, Radha Ashtami every occasion was celebrated jubiliantly. During Baba Taj's Urs celebrations in Nagpur, processions sandals are take out from different parts of the city which culminate at Taj Bagh. Few sandals went enroute Darbar. They stopped at the entrance of Darbar and played music. Beloved Papa came out to pay His homage to Baba Tajudin. Prasad and sharbat was served to the gathering. Many a times He would order at 9.00 in the morning that langar is to be prepared by noon. Langar was prepared by lady devotees. Male members used to rush to the market for vegetables etc. and the ladies started the

preparations. As per His command langer was kept ready in time.

He insisted that everyone should contribute something in langar as per their capability. Even a spoon of salt contributed for langer is sufficient but everyone should have a share in it. Participation of everyone was insisted on by Him. He said if you can't contribute financially, you can serve langer, you can clean up the place, wash the utensils etc. He also used to say one who cleans the place, wash utensils actually get more blessings from Baba. His Glories are numerous. We will continue further in our next issue.

Annual calenders and diary – 2012 are ready now. A very inspiring book titled Gospel of Sri Anand Sai was published on the occasion of Guru Pooja. If you desire to have these do contact Sai Publications. We wish all our readers, well wishers and all Sai devotees a Saimay Deepavali. May His Divine Light enlighten us to move more closer to Him – Amen.

"Jai Jai Data Anand Sai."

Three pronged attack on Dukhas

1. Akhand Nama Samran.

2. Daily parayan of Vishnu Sahasarnam.

3. Daily parayan of a few pages of Sri Sai Geeta.

"Om Sri Sai."

DIVINE PATH

(From the speeches of 'PAPA' Sri Anand Sai)

Om Sri Sai

All Saints are Sri Maharaj, Baba Sainath

One who says Om Sri Sai My Holy Divine Maa stands by his side. When you repeat Om Sri Sai the Lord of Lords Baba Sai Nath showers His Mercy Divine. Om Sri Sai works as soap, washing away the dirt and purifying the soul. By repeating Om Sri Sai, negaitve forces take flight, they run for shelter. What ecstatic joy it would be if the Maa and Her Divine name is always remembered, repeated with every breath. O! my loving Maa. Shower Thy Divine Grace and make me repeat Thy Holy *Pawan* Maha Mantra Om Sri Sai at all cost and in every state of mind. *Karmas* may come, *Karmas* may go but Thy Grace will always enlighten me by Thy sweet name Om Sri Sai, Om Sri Sai, Om Sri Sai. Om Sri Sai is the Creater, the Preserver, the Destroyer of all mankind. Om Sri Sai is the energy running the physical phenominal world. Om Sri Sai is the live force which gives life to every creature on earth. Om Sri Sai is The Divine Light. Om Sri Sai is The Primodial Light. Om Sri Sai is beyond man's understanding. Om Sri Sai is far away from our little intellect. Om Sri Sai is real joy, peace, tranquility, *anand, sat swaroop*. Om

Sri Sai is equal to all The powers, *shaktis*, energies of this universe. Om Sri Sai is all powerful.

Om Sri Sai is *tarak mantra*. It has full power to destroy evil forces. If repeated for a while with *bhav* and faith Maa stands near you and evil sways. Om Sri Sai is the Nectar Divine. Om Sri Sai is a boat Divine which ferries us accross the ocean of births and deaths. Om Sri Sai is Sai Himself. When The Name is on the lips, Sai Maa in your heart, she appears and crushes all demons. Om Sri Sai is *Maha Mantra*. It shines more and more, than comes out with full force to save the child. Om Sri Sai saves us every time in every situation. Maya is defeated by Om Sri Sai. Om Sri Sai is The real Guide. Om Sri Sai is The Light of Lights.

O Maa Sai! I am Thine, I am Thine, I am Thine. O Loving Baba! I am Thine, I am Thine, I am Thine. Oh Om Sri Sai! I am Thine, I am Thine, I am Thine. Forgive my sins, forgive my sins, forgive my sins. Take away this devil ego 'I', it is Thine. Amen.

This should be your prayer.

"Om Sri Sai."

The more the ego is inflated, the further one gets away from God and Grace. The more the ego is punctured the closer one gets to the Inner Reality.

"Om Sri Sai."

SPIRITUAL BASE

1. Lead a simple life.
2. Have few wants
3. Earn only according to your needs.
4. Live and let live.

"Om Sri Sai"

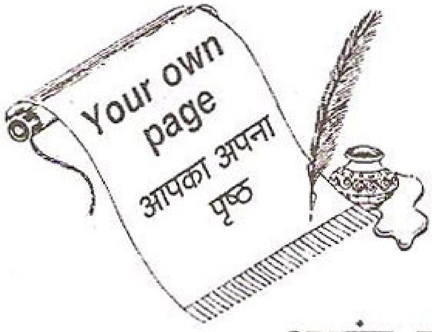

सद्भाव

आनंद-पथ पर चलकर देखो, सब सुख तुम पा जाओगे।
चलते-चलते इन राहों पर, तुम हीरा बन जाओगे।।

आनंद साईं बाँह पकड़ लो, कभी न धोखा खाओगे।
सत्मार्ग पर चलते चलते, तुम मुक्ति पा जाओगे।।

आनंद-स्रोत बहाकर देखो, जग के तुम हो जाओगे।
मस्ती में बस झूम-झूम कर, तुम मेरे बन जाओगे।।

आनंद-ज्योति जलाकर देखो, जग उजियारा पाओगे।
नाम साईं का जपते-जपते, साईंमय हो जाओगे।।

आनंद-महिमा गाकर देखो, तुम उसमें खो जाओगे।
साईं मेरा कहते-कहते, दीवाने बन जाओगे।

आनंद-सागर में डूबके, तुम मोती पा जाओगे।
प्यार दिलों में भरते-भरते, संत-सखा बन जाओगे।।

आनंद साईं द्वारे आकर, मंत्र मुग्ध हो जाओगे।
श्रद्धा उर में भरते-भरते, नत-मस्तक हो जाओगे।।

– *इन्दु श्रीवास्तव,* लखनऊ

परम पूज्य गुरुदेव आनंदाय नमः

पहले तो मैं एक भ्रमित व्यक्ति की तरह परमशान्ति की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर, एक तीर्थ से दूसरे तीर्थ में घूमता रहा। परमेश्वर की सकाम उपासना करता था। जगह-जगह पर सत्य की खोज की परन्तु शान्ति तो कहीं मिली नहीं। अन्त में पिछले कर्मों के सौभाग्यवश पूज्य गुरुवर श्री आनंद साईं जी के सत्य स्वरूप के समक्ष पहुँचते ही अंतर शांति का संचार हुआ और प्रतिदिन संध्या समय उनकी दिव्य शक्ति स्वयं ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती। पूर्ण परमेश्वर आदि गुरु ही पूर्ण तत्व रूप में श्री आनंद साईं जी में हमें साक्षात साकार रूप में दिखाई देने लगे। पहले तो हम परमेश्वर को केवल

परमात्मा, सर्वात्मा, सर्वव्यापी, सर्वज्ञाता, सर्वदृष्टा आदि विशेषणों से संबोधित करते थे। परन्तु अब ये सब विशेषण हम अपने गुरुवर श्री आनंद साईं जी जो साकार स्वरूप से ईश्वर हैं, जिसे हम अपने अनुभवों से सिद्ध कर चुके हैं कि वे पूर्ण परमेश्वर के रूप हैं, पूर्ण गुरुतत्वधारी हैं। वे प्रत्येक जगह पर सूक्ष्म रूप में हमारे साथ रहकर हमारे अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा जानते हैं। इससे उनका सर्वव्यापकत्व सिद्ध होता है। यदि हमारे मन में कोई शंका किसी दिन उठती तो उसी दिन संध्या को प्रार्थना में बिना पूछे ही समाधान कर देते। वे सर्व दृष्टा रूप से हमारे सब कर्म देखकर सदैव निष्काम भक्ति और अच्छे कर्म करने की ओर प्रेरित करते। हमारे अनुभवों की खान वे स्वयं हैं।

एक बार शिरडी में मैं संध्या समय गुरु ॐ की धुनी में सभी गुरुभाई-बहनों के साथ अपनी अंतरआत्मा की मस्ती में था तो बाबा साईंनाथ ने अपने पास बुलाकर कहा, ''आनंद साईं मेरा ही नाम है और मेरा ही स्वरूप हैं, मुझ तक सीधे आने की कोशिश मत कर, मेरे इस रूप को पहचानो और इसके द्वारा ही मुझ तक पहुँचो।'' जब मैं गुरुवर के चरणों की ओर जा रहा था तो लोगों ने मुझे रोका और मैं फिर से बाबा की ओर बढ़ा तो बाबा साईंनाथ डांटकर बोले, ''मुझ तक सीधे न आओ वापस आओ।'' यह बात मुझे बाबा ने समझाई। सत्य को पहचानना जरूरी है वरना जन्म मरण का चक्कर लगा हुआ है।

श्री गुरु चरणों में यही प्रार्थना है कि पूर्ण परमेश्वर आनंद स्वरूप द्वारा सारे जगत को आनंद मिलता रहे।

– *अजीत वासवानी,* नागपुर

रख भक्तों की शान

जे कर दूर रखनाए, ते लैलै मेरे प्राण वे।
मन तैतों वाराँ नाले वाराँ तैतों जान वे।।

अब नहीं सहन होता, कैसे छिपावाँ मैं,
दिल वाले दुखड़े किसनूँ सुनावाँ मैं,
तेरे बिना लगदा सारा सूना जहान वे,
मन तैतों वाराँ नाले वाराँ तैतों जान वे।।

ए है केडे ग्रंथ दा कहना वे,
जग बिच आ के दाता छिप-छिप रहना वे,
हाथ विच बाँसुरी लैके सुना दे मीठी तान वे,
मन तैतों वाराँ नाले वाराँ तैतों जान वे।।

द्रोपती ते अर्जुन वाँगन लखाँ ने पुकारदे,
सदियों से दाता तेरा रस्ता निहारदे,
चक्र सुदर्शन लै के, रख भक्ताँ दी शान वे
मन तैतों वाराँ नारे वाराँ तैतों जान वे।।

– *बलिदेवी चचरा,* नागपुर

श्रद्धांजली

प्राणप्यारे गुरुवर की प्रिय आत्मा श्रीमती रमा रत्ती अपना कर्म-भोग पूरा कर अंत में दि. २८ जुलाई २०११ को "ॐ साईं श्री साईं जै श्री साईं" की धुनी सुनते-सुनते श्री गुरु चरणों में सदा-सदा के लिए विलीन हो गईं।

उनके परिवार वालों ने बताया कि वे शरीर छोड़ने से पहले चंद शब्द लिखाकर गईं। ये शब्द हम यहाँ दे रहे हैं। उन्होंने लिखाया –

यूँ तो रत्ती जी जब थे तब से ही गुरु कृपा थी। जितने भी मुझे अनुभव हुए सुनाऊं तो कम हैं। उनकी रक्षा का हाथ इतना जबरदस्त है कि बता नहीं सकती। जितना उनका गुणगान करना चाहती हूँ कर नहीं पाती। मेरा रोआँ-रोआँ जितना भी अपने गुरु महाराज का शुक्रगुजार करे वह कम है।

प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी के चरणों में नतमस्तक हो यह प्रार्थना है कि उनके परिजनों को शांति प्रदान करें।

– *संपादक*

मेरे प्यारे आनंद साईं

मेरी सासों में, मेरी धड़कन में, बस गए आनंद साईं।
मेरी बातों में, मेरे विचारों में, समा गए आनंद साईं।।

मेरे करणों में गूंजे, जय जय दाता आनंद साईं।
मेरे होंठ जब भी खुलें, बस बोलें आनंद साईं।।

मेरे हर काम में, हर हरकत में बस गए आनंद साईं।
अम्बर में धरती के कण-कण में रमे हुए आनंद साईं।।

जरा आँखें खोल के देखो, पारब्रह्म हैं आनंद साईं।
मत भरमाओ जान लो पहिचान लो अपने आनंद साईं।।

हम जैसे भूले भटकों को तारने आए प्यारे आनंद साईं।
पल-पल, दिन-दिन भरे मन से जपो जपाओ आनंद साईं।।

प्रेम भरे हृदय से पुकारो दौड़े आएं आनंद साईं।
आनंद साईं, आनंद साईं, आनंद साईं, आनंद साईं।।

– *ममता भारती,* नागपुर

प्राणप्यारे गुरुदेव

विघ्नहर्ता गुरुदेव श्री आनंद साईं।
दुःखहर्ता गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

पाप विनाशक गुरुदेव श्री आनंद साईं।
ताप विनाशक गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

सुखकर्ता गुरुदेव श्री आनंद साईं।
मंगलकर्ता गुरुदेव श्री आनंद साईं।

निर्धन के घन गुरूदेव श्री आनंद साईं।
निर्बल के बल गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

अशरण शरण गुरूदेव श्री आनंद साईं।
तरण तारण गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

शरण लीन्हा गुरुदेव श्री आनंद साईं।
निर्मल कीन्हा गुरुदेव श्री आनंद साईं।।

तुम को पाना और कछु भी चाहें नाहीं।
हम तुम्हारे तुम हमारे आनंद साईं।।

नाम तुम्हारा पल भर भी छूटे नाहीं।
आनंद साईं आनंद साईं आनंद साईं।।

''अन्जान''

सतगुरु श्री आनंद साईं द्वारा रचित

साईं पब्लिकेशन्स के कुछ नए प्रकाशन

श्री आनंद साईं वचनामृत

GOSPEL OF SRI ANAND SAI

परम औषधि साईं नामा

श्री साईं आराधन ● इश्क-ए-साईं

वर्ष 2012 के

★ वॉल कॅलेण्डर ★ टेबल कॅलेण्डर

★ साईं नमन (डायरी) ★ पॉकेट कॅलेण्डर

इत्यादी भी उपलब्ध हैं।

पत्रव्यवहार के लिए पता

आनंदा अपार्टमेंट के पास, श्री आनंद साईं मार्ग,

क्लार्क टाऊन, नागपुर-440 004. (महाराष्ट्र)

वेबसाईट : www.shrinandsai.com / saigeeta.org

ई-मेल : anandsai13@yahoo.com

saipublications@rediff.com

मोबाईल : 9823134765 / 9373125938

फोन : 0712-6574825

SAI PUBLICATIONS

NAGPUR

PRESENTS

SAI CALENDERS 2012

(WALL HANGING, TABLE & POCKET)

DIARY (Sai Naman)

GREETING CARDS

& OTHER ITEMS

CONTACT :

SAI PUBLICATIONS

SRI ANAND SAI MARG, BESIDES ANANDA APARTMENT,

CLARKE TOWN, NAGPUR-440 004.

PHONE : 6574825, CELL : 9823134765

नववर्ष के लिए साईं पब्लिकेशन्स की ओर से भेट

प्रिय आत्मन,

प्राणप्यारे सतगुरु बाबा साईंनाथ के अमृत पुत्र श्री आनंद साईं जी ने साईं पब्लिकेशन्स की स्थापना की । बाबा साईंनाथ के द्वारा बताए गए सत्मार्ग का निस्वार्थ प्रचार व प्रसार ही इसका परम उद्देश्य है। प्राणप्यारे की दया व अनुकंपा से यह सत्कार्य निष्काम भाव से न नफा न नुकसान के आधार पर पिछले कई वर्षों से चलता जा रहा है। श्री साईं गीता, अमृत सागर, साईं माँ, जै गुरु शक्ति जैसे अमृत ग्रंथ व अन्य सौ से भी ज्यादा प्रकाशन देश-विदेश में अनंत आत्माओं का मार्ग दर्शन कर रहे हैं। साईं अमृत पुत्र की करुणा, बाबा साईंनाथ के आशिर्वाद, माँ भगवती की दया व आप सभी साईं भक्तों के सहयोग से वार्षिक कॅलेण्डर व डायरी के द्वारा भी बाबा परम कृपाल का सत्संदेश जन-जन तक पहुँच रहा है। वर्ष 2012 के कॅलेण्डर का विषय है "सात्विक जीवन"।

कॅलेंडर्स के साथ-साथ इस वर्ष "श्री आनंद साईं वचनामृत" (Gospel of Sri Anand Sai) का भी प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तिका में प्राणप्यारे सत्गुरु श्री आनंद साईं जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र व उनके हस्तलिखित संदेश प्रकाशित किए गए हैं। यह एक नायाब पुस्तिका है। बाबा साईंनाथ की तस्वीर व संदेश युक्त एक्रेलिक स्टैंड पैन स्टैंड भी उपलब्ध हैं। गत वर्ष भी "साईं नमन" डायरी की इतनी माँग रही कि अंत में बहुतों को निराश होना पड़ा। इस वर्ष की डायरी का साईज़ है 5.25"x 8.5"। हर एक दिन के लिए एक पृष्ठ दिया गया है। बाबा की मनभावना तस्वीरें, अमृत संदेश, भजन, प्रार्थना इत्यादि इस डायरी के प्रमुख आकर्षण हैं। यह डायरी आपके साथ हर दिन रहेगी और बाबा की याद दिलाती रहेगी। अपने सभी प्रिय जनों को भेंट स्वरूप यह डायरी देकर आप उनको भी आनंदित कर सकते हैं।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी बाबा दीनदयाल के तीन प्रकार के कॅलेंडर प्रकाशित किए गए हैं। दीवार कॅलेंडर छः पृष्ठों में, डेस्कटॉप कॅलेंडर भी छः पृष्ठों में और पॉकेट कॅलेंडर आठ प्रकार के हैं। दीवार कॅलेंडर का साईज 17"x 22", डेस्कटॉप कॅलेंडर का साईज़ 5.5"x 11" है। कॅलेंडर के हर एक पृष्ठ पर परम दयालु बाबा साईंनाथ की मनमोहनी तस्वीर व उनका अमृत संदेश दिया गया है। यह सुसज्जित कॅलेंडर आपको मंत्र मुग्ध कर देंगे। "दिव्य संदेश" नामक एक और डेस्क टॉप कॅलेंडर भी हमारे पास उपलब्ध है। इस कॅलेंडर में 31 पृष्ठ हैं जिन पर भगवान के विभिन्न रुपों की तस्वीरें व संदेश दिए गए हैं। इसमें दिन व तारीख है इसे आप कई वर्षों तक उपयोग में ला सकते हैं।

इसी प्रकार बाबा की तस्वीर व संदेश के साथ "ग्रीटिंग कार्ड" भी हमारे पास उपलब्ध हैं। इन कार्डों को हर अवसर पर उपयोग किया जा सकता है। किसी शुभ अवसर पर जब आप यह ग्रीटिंग कार्ड भेजते हैं तो आपकी शुभकामनाओं के साथ आप बाबा साईंनाथ का आशिर्वाद भी उनके अमृत संदेश के रूप में अपने प्रिय जनों को भेजते हैं।

ऊपर लिखित व अन्य प्रकाशनों के लिए आप हमसे सीधा संपर्क कर सकते हैं या पिछे दिए गए पत्तों पर भी संपर्क किया जा सकता है। पत्र व्यवहार करते समय कृपया अपना पूरा पत्ता, पिन कोड व फोन नम्बर/मोबाईल नम्बर साफ-साफ लिखना न भूलें/कोरियर/डाक खर्च अतिरिक्त लगता है।

आपसे अनुरोध है कि कृपया डिस्काऊंट या कीमत में किसी प्रकार की कटौती के लिए आग्रह न करें। साईं पब्लिकेशन्स न नफा न नुकसान के आधार पर ही कीमत निश्चित करती है। बाबा साईंनाथ का सत् संदेश घर-घर पहुँचाना ही इस संस्था का एक मात्र उद्देश्य है। आप सभी का इस कार्य में सहयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है। अतः आप सभी से अनुरोध है कि इस सत्सेवा में बढ़ चढ़ कर भाग लेकर दयासिंधु बाबा साईंनाथ की कृपा पाएँ

धन्यवाद !

"जै जै दाता आनंद साईं"

मूल्य इस प्रकार हैं :

छः पृष्ठों वाला दीवार कॅलैंडर	रूपये 30/- प्रत्येक	परम औषधि साईं नामा	रूपये 25/- प्रत्येक
छः पृष्ठों वाला टेबल कॅलैंडर	रूपये 30/-प्रत्येक	एक्रेलिक टेबल स्टैंड (बिना घड़ी के) (सोते व उठते समय की प्रार्थना)	रूपये 100/- प्रत्येक
पॉकेट कॅलैंडर पी.वी.सी. कवर सहित	रूपये 3/- प्रत्येक	एक्रेलिक टेबल स्टैंड (घड़ी के साथ) (सोते व उठते समय की प्रार्थना)	रूपये 150/- प्रत्येक
ग्रीटिंग कार्डस् लिफाफे सहित	रूपये 8/- प्रत्येक	एक्रेलिक टेबल स्टैंड (श्री साईं स्तोत्र)	रूपये 75/- प्रत्येक
दिव्य संदेश	रूपये 40/- प्रत्येक	श्री आनंद साईं वचनामृत (पुस्तिका)	रूपये 101/-प्रत्येक
साईं की टेबल घड़ी	रूपये 160/- प्रत्येक	श्री साईं आराधन	रूपये 25/- प्रत्येक
साईं नमन (डायरी)	रूपये 80/- प्रत्येक		

(कुरियर डाक-खर्च अतिरिक्त, पैकिंग-फॉर्वर्डिंग मुफ्त)

यदि आप चाहें तो कॅलैंडर्स पर आपका नाम व पता भी छाप कर दिया जा सकता है। इसका खर्च अतिरिक्त लगेगा। (100 कॅलैंडर से कम के ऑर्डर पर छपाई नहीं की जाएगी।)

केवल लोकल चेक ही स्वीकारे जाते हैं।